महाकविक महाप्रयाण



डॉ. रंगनाथ दिवाकर

महाकविक महाप्रयाण

(महाकवि कालिदासक मैथिलत्व आ महाप्रयाण विषयक नाटक)

डॉ. रंगनाथ दिवाकर



अनुप्रास प्रकाशन

जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुरक तत्वावधानमे मनोलिता प्रकाशन, दरभंगा/पटना प्रस्तुत करैत अछि...

अनुप्रास हार्डबैक्स

ISBN : 978-93-91371-12-8



महाकविक महाप्रयाण

(महाकवि कालिदासक मैथिलत्व आ महाप्रयाण विषयक नाटक)

पहिल संस्करण : 2022

मूल्य : ₹ 800/-

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन

कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211

वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com

ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com

मोबाइल : +91 8862977228

पोथी प्राप्तिक स्थान :

- 102,अनंत विकास अपार्टमेंट,
वेदनगर, रुकनपुरा, पटना-800014

- श्री मनोज कुमार चौधरी
न्यू बलभद्रपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा (मिथिला), बिहार- 846001

मोबाइल : +91 9155221944 /8709610336

आवरण पेंटिंग : श्री मिथिलेश कुमार

भा. प्र. से.(से.नि.)

थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

MAHAKAVIK MAHAPRAYAN

A Critical and Dramatic Assessment of Mahakavi Kalidas : His Maithilatva and Mahaprayan by

Dr. Rangnath Divakar

Published by ANUPRAS PRAKASHAN

First Edition : 2022

Price : ₹ 800/-

समर्पण

तीनू मातृशक्ति—

स्मृतिशेष पू. माता कृष्णा देवी *(महाप्रयाण 23 अक्टूबर 2015),*

स्मृतिशेष पू. अम्मा गीता देवी *(महाप्रयाण 24 अक्टूबर 2014),*

आ

स्मृतिशेष पू. चाची शची देवी *(महाप्रयाण 25 फरवरी 2022)*

एवं

एवं तीनू पितृपुञ्ज—

स्मृतिशेष पू. बड़का बाबू जगन्नाथ चौधरी *(महाप्रयाण 24 अप्रैल 2014),*

स्मृतिशेष पू. छोटका बाबू डॉ. गोविन्द नारायण चौधरी *(महाप्रयाण 21 नवम्बर 2016),*

आ

पूज्य ददा श्री वासुदेव नारायण चौधरी *(जन्म 5 फरवरी 1927)*

केर

श्रीचरणमे

सादर समर्पित।

रंगनाथ दिवाकर

(रंगनाथ दिवाकर)

प्रो. शशिनाथ झा
कुलपति
कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार- 846008



Prof. Shashi Nath Jha
Vice-Chancellor
kamehwarsingh Darbhanga Sanskrit
University, Darbhanga, Bihar-846008
mob.: 9199475909

पत्रांक :............ दिनांक :...............

शुभकामनासन्देश

महाकवि कालिदास विश्व साहित्यक प्रख्यात साहित्यकार छलाह, जनिक परिचय, जीवनी, स्थान ओ काल पर विगत डेढ़ सए वर्षसँ घमर्थन होइत रहल अछि। एहि दिशामे विद्याव्यसनी विज्ञ लेखक ओ कुशल प्रशासक श्रीयुत रंगनाथ दिवाकर जी अपन गहन अध्यन ओ परिश्रम कए प्रमाणपूर्वक जे तथ्य प्रस्तुत कएलनि अछि से मननीय एवं प्रशंसनीय थिक। प्रत्येक बिन्दु पर प्रबल युक्ति एवं प्रामाणिक उद्धरण हिनक लेखन कुशलताक परिचायक भेल अछि।

कालिदासक मैथिलत्वक सिद्धिमे पं. जीवनाथ झा 1962मे ओ डॉ. जयमन्त मिश्र 1984मे प्रचुर सामग्री देने छथि, तकर उल्लेख एतए नहि भए सकल अछि, ओना ओकर कतोक विषय एतए आबि गेल अछि।

प्रस्तुत पोथीमे कालिदासक सम्बन्धमे विविध पक्ष पर आधारित बारह गोट निबन्ध आ कालिदासक महाप्रयाण पर आधारित नाटक विन्यस्त अछि, जाहिमे निबन्ध महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व ओ सीताविषयक धारणा मिथिलाक उत्कर्षसँ सम्बद्ध अछि। एतेक दृढ़ भए एहन प्रतिपादन प्रथमे बेर देखल गेल अछि। शेष निबन्ध कालिदास ओ कुमारदासक सख्यभाव पर आश्रित अछि, जकर परीक्षण आलोचकगण अवश्य करताह ओ एहि युक्ति सबहक सम्यक् समीक्षा कए लाभान्वित होएताह। एहि विषयक एतेक सामग्री एकठाम भेटब बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।

लेखक महोदयक एहि उत्कृष्ट प्रयासक भूरि-भूरि प्रशंसा करैत हिनक लेखनीक प्रवाहमय रहबाक शुभकामनासन्देश प्रेषित करैत छी।

शशिनाथ झा
22.03.2021
(शशिनाथ झा)

भूमिका

काव्येषु नाटकं रम्यम्

अर्थात् जतेक प्रकारक काव्य अछि ओहिमे नाटक सभसँ बेसी आनन्दज अछि। एहि बातक पुष्टि निम्नांकित कथासँ होइत अछि—

एक बेर ब्रह्मा थाकल-ठेहिआएल विष्णु लग पहुँचलाह आ कहलथिन जे हम सृष्टि करैत-करैत थाकि गेलहुँ। हमरा जीवनमे नीरसता आबि गेल अछि। एकरासँ कोना छुटकारा भेटत तकर उपाय हमरा बता दिअ। एहिपर विष्णु कहलथिन जे एकर उपाय हमरा लग नहि अछि। अहाँ शिवजी लग जाउ। तखन ओ शिवजी लग गेलाह आ सभ बात हुनका कहलथिन। हिनक बात सुनिक' शिवजी नन्दिकेश्वरकेँ बजौलथिन आ कहलथिन जे हम जे अहाँकेँ नाट्यवेद सिखौने छी, ओ प्रयोग सहित हिनका सिखा दियौन। नन्दिकेश्वर शिवजीक आज्ञा मानि सम्पूर्ण नाट्यवेद प्रयोग सहित सिखा देलथिन। एहि तरहे ब्रह्मामे जे थकान आएल छलनि ओ दूर भेलनि।

आब कहल जाए जे एहन कोन साहित्यिक विधा छैक जकरामे एहन क्षमता होइक। नहि छैक तेँ तँ एकरा साहित्यक मणिमय मुकुट कहल गेलैए। हमरा तँ लगैए जे ई लोभ्य विद्या अछि तेँ दिवाकरजी एहि दिस अग्रसर भेलाह अछि। आओर विषय-वस्तुक रूपमे चयन कएलनि अछि। संसारक महान् नाटककार कालिदासकेँ जनिक अभिज्ञान शाकुन्तलम् भारतेमे नहि, अपितु संसारमे अपन वर्चस्व स्थापित कएलक। एहि सभ प्रसंगमे हम एकटा बात कह' चाहब— जखन कोनो पुरुष सफलताक शिखरपर पहुँचैत छथि तँ हुनका संग अनेकहु किंवदन्ती जुटि जाइत छनि। यथा-विद्यापतिक संग उगना, कालिदासक संग काली, पाणिनिक संग महेश्वर आदि। मुदा जखन एकरा सत्यक कसौटीपर रखैत छी तँ खरा नहि उतरैत अछि। जेनाकि कहल जाइत अछि जे कालिदास कालीक पैघ भक्त छलाह तेँ लोक हिनक नाम कालिदास राखि देलकनि जे व्याकरणसँ सिद्ध नहि होइत अछि। कारण, जँ इएह बात रहितै तँ हिनक नाम कालीदास रहबाक चाहैत छलनि जे नहि अछि।

खैर, एहन-एहन किंवदन्तीक लाभ हमरा लोकनिक प्राचीन साहित्यकार खूब उठौलनि अछि। एतबए नहि, पाठक हिनका लोकनिक साहित्यकेँ हृदयसँ

स्वागतो कएलकनि अछि। हमरा लगैए जे एही तरहक सोचक चलते दिवाकरजी अपना नाटकक हेतु एहन विषय-वस्तुक चयन कएलनि अछि। तँ तँ कालिदासकेँ वज्र मूर्ख बनाक' ओही डारिकेँ कटबैत छथि जाहि डारिपर ओ बैसल रहैत अछि। विदूषकक सहायतासँ विद्योत्तमा सन विदुषीकेँ वज्र मूर्ख कालिदाससँ हरबा दैत छथि। हँ, किछु गोटेक मोनमे अवश्य ई बात उठतनि जे एहिसभ बातमे जे सत्यता नुकाएल अछि ओकर उजागर करब आइ-काल्हुक युगमे आवश्यक छल। मुदा नहि, लोकविश्वासकेँ अक्षुण्ण राखब सेहो लेखकक कर्तव्य भऽ जाइत छैक। एहि सम्बन्धमे हम 'द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'क किछु पाँती उल्लेख कर' चाहब, ''भारतक दन्तकथासभ महाकाव्ये धरि सीमित नहि अछि। ई वैदिक काल धरि पहुँचैत अछि आ अनेक रूप एवं पोशाकमे संस्कृत साहित्यमे अबैछ। कवि आ नाटककार एकर पूरा लाभ उठबैत अछि आ एकर आधार बनैत अछि सुन्दर कल्पना। कहल जाइत अछि जे युवतीक चरणक स्पर्शसँ अशोकक वृक्ष फुलाइत अछि।...शिवक तेसर नेत्रसँ निकलल ज्वालामे कामदेव भस्म भ' जाइत छथि, तथापि ओ अनंग, बिना शरीरक भैयोक' जिन्दा रहैत छथि।[1]'' की, ई बात दिवाकरजीक सोचक समर्थन नहि करैत अछि? तँ उक्त सम्बन्धमे कोनो प्रश्नचिह्न ठाढ़ करब निरर्थक होएत।

प्रस्तुत नाटकमे नट, नटी, अनुचर तथा गीतक प्रयोग प्राचीन संस्कृत नाटकक स्मरण करबैत अछि। किएक तँ जहिना प्राचीन संस्कृत नाटकमे नाटकक स्थापना सूत्रधार आ नटी करैत अछि। ओहिना एहि नाटकमे नट आ नटी करैत अछि। संगहि दुनू पण्डितसँ अनुचर ओहिना चुटकी लैत अछि जहिना विदुषक प्राचीन संस्कृत नाटकमे लैत रहैत छैक।

हमरालोकनिकेँ एकटा बात बुझले अछि जे नाटकमे नाट्य भाषाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। ई भाषा प्रेक्षककेँ अपना दिस आकृष्ट करैत रहैत छैक। जेनाकि सोहाग रातिमे विद्योत्तमा कलुआक हाथ पकड़िक' अपना लग बैसा लैत अछि। एहिठाम विरोधाभासक स्थिति उत्पन्न होइत छैक। एक दिस विद्योत्तमा उमंगसँ उमड़ल रहैत अछि तँ दोसर दिस कलुआ अपन आर्थिक आ सामाजिक स्थितिकेँ देखैत ओहिना सकुचा जाइत अछि जहिना लजबिज्जीक पात घोकचि जाइछ। फेर आगाँ स्थिति बदलैत छैक। विद्योत्तमाकेँ जखन वस्तु-स्थितिक पता चलैत छैक तँ ओकर सभ उमंग झहरि जाइत छैक। ओ नागिन जकाँ क्रुद्ध भ' जाइत अछि आ अनाप-सनाप कलुआकेँ कह' लगैत छैक। एकरा ओ सहैत रहैत अछि, मुदा एकर बाद ओकर पौरुष

1. पं. जवाहरलाल नेहरू : हिन्दुस्तान की खोज (अनुवाद), पृष्ठ 116

जगैत छैक। ओ कोबर कक्षसँ पाएर पटकैत विदा भ' जाइत अछि। विद्योत्तमाक इएह दुत्कार कलुआकेँ कालिदास बना दैत छैक। एहि तरहे देखल जाए तँ ई नाटक संवाद मात्रक संकलन नहि भ' क' अपन नाट्य भाषासँ युक्त अछि।

नाटकक सम्बन्धमे कहल गेलैए जे ई सार्ववर्णिक वेद अछि। सार्ववर्णिकक तात्पर्य एहिठाम जाति आ वर्गसँ रहितहु एकटा पेंच एहिमे घुसिया जाइत अछि, आ ओ पेंच अछि प्रेक्षक तथा दर्शक। एहिमे प्रेक्षक ओ होइत अछि जे नाटकक शुरूसँ ल' क' अन्त धरि ओकर मर्मसँ अपनाकेँ जोड़ने रहैत अछि, मुदा ठीक एकर विपरीत दर्शक ओ होइत अछि जे उपर-झापड़ देखलक आ चलि देलक। ई नाटकक मर्म धरि नहि पहुँचैत अछि। यथा, राजा सलहेश लोकनाट्यक प्रेक्षक निरक्षर आ अखरकट्टू होइत अछि। ई साधारणतया निम्न वर्गसँ अबैत अछि। ई सभ भरि-भरि राति एहि लोकनाट्यक रसमे अपनाकेँ डुबौने रहैत अछि। ओहीठाम प्रबुद्ध लोक एक तँ ई लोकनाट्य देख' नहि जाइत अछि आ जएबो कएल तँ उपर-झापड़ देखिक' उपहास करैत चल जाएत। एहिना जँ संसारक महान् नाटककार सैमुएल बैकेटक प्रसिद्ध नाटक 'वेटिंग फॉर गोदो'क प्रदर्शन कोनो ग्रामीण मंचपर कएल जाए तँ हमरा नइँ लगैए जे एकर केओ प्रेक्षक बनि सकत। ई तँ आयु, शिक्षा, पेशा, रूचि आदिपर निर्भर करैत छैक।

प्रस्तुत नाटककेँ प्रबुद्ध वर्ग हाथो-हाथ लेत से हमर दृढ़ विश्वास अछि। किएक तँ सिंहलक युवराजसँ कालिदासक मैत्री सम्बन्ध, कामसेनासँ सम्पर्क, फेर हिनक मृत्यु आदिक बारेमे हमरा जनैत बहुत गोटे नहि जनैत होएताह जकरा ई नाटक प्रकाशमे अनलक अछि। एतबए नहि, जाहि ढंगसँ एकर घटनाक्रम चलैत अछि, ओ सहजहिं पाठक, दर्शक तथा प्रेक्षकक मोनमे उत्सुकता उत्पन्न क' दैत छैक। आओर एही उत्सुकताक चलते पाठक एकर मंचन देख' चाहत तथा दर्शक प्रेक्षक बनि जाएत ताहिमे हमरा सन्देह नहि अछि।

आब सभ किछुकेँ देखैत हम एतबए कहब जे ई एकटा पूर्ण सफल नाटक अछि।

महेन्द्र मलंगिया

(महेन्द्र मलंगिया)

किछु आखर

मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः।।

रघुवंशम् (1/3)

महाकवि कालिदासक वचन उद्धृत करैत हम कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास सन विराट् व्यक्तित्वपर एहि अकिंचनक किछु लिखबाक साहस ओहिना अछि जेना ऊँचगर डारिपर लागल फल तोड़बाक लेल कोनो बाओनवीर अपन छोट-छोट हाथ उठा अपन उपहास करा रहल हो। मुदा की करी, महाकविक जीवन यात्रापर मातृवाणी मैथिलीमे महाकविक मैथिलत्व विषयक कोनो पोथी नहि देखि हम ई दुस्साहस करबाक लेल विवश छी। विश्वक प्रायः सब महत्त्वपूर्ण भाषामे महाकवि कालिदास विषयक सामग्री अछि। मैथिलीमे सेहो अछि मुदा पोथी रूपमे कदाचित् ई प्रथमे पुष्प अछि जाहि संग हम महाकवि कालिदासक अभ्यर्थनामे उपस्थित भेल छी।

महाकविक रचना रस केर पीयूष वर्षासँ आप्लावित भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनक जन्मस्थानक दावी कयने अछि। मिथिलाक अपन दावी सेहो अछि। एकरे मूल्यांकन एहिमे भेल अछि। महाकविक जीवनयात्रा रोमांचकारी अछि। जन्मस्थल मिथिला, कर्मस्थल पाटलिपुत्र आ उज्जैन एवं महाप्रयाण स्थल श्रीलंकाक माटरा! एहि मध्य अनेकशः अनुश्रुति, जनश्रुति, दंतकथा, किंवदन्ती, प्रवाद, रहस्य आ किन्तु-परन्तु केर सागरमे भुतिआयल महाकविक जीवनवृत्तसँ तथ्य केर अमृत आनब अत्यन्त दुष्कर काज अछि। प्रत्येक क्षेत्रक प्रातिभ महाकविकेँ अपन प्रमाणित करबामे अपन प्रतिभा आ वैदुष्यक सर्वश्रेष्ठ उपयोग कयने छथि। एहन स्थितिमे हुनकर मान्यताक काट करबाक लेल ओहि डरीर सभसँ पैघ डरीर उकेरब आवश्यक। हम एहि विषयक विवादक क्षीरसागर मथि महाकविक मैथिलत्व केर नवनीत लऽ अपने सभक समक्ष उपस्थित भेल छी। एहि पोथीक प्रत्येक पाँतीक मूलस्वर महाकविक मैथिलत्वे अछि।

विनम्र निवेदन जे एकर मूल्यांकनमे महाकवि कालिदासकेँ 'पूरब केर शेक्सपीयर' कहि अपन उपहास करओनिहार आंग्ल दृष्टिकोण नहि राखल जाय। शेक्सपीयर महान् लेखक अवश्य छथि मुदा जँ महाकविसँ तुलना करब तखन पासँगसँ विशेष नहि मानऽ पड़त। ओना एहन कोनो तुलना अशोभनीय अछि। भाषाक अपन सीमा, सम्प्रेषण केर पृथक् मानदण्ड आ देश-काल-परिस्थितिक पार्थक्यक कारणेँ एहन तुलना उचित नहि। किछु कठपिंगल आंग्ल विद्वान् सभसँ प्रभावित विशेष रूपसँ मैकाले केर विषबीजसँ प्रस्फुटित आ अनुप्राणित लोक अपन उत्कृष्ट आ विलक्षणो वस्तुकेँ साधारण वा हेय मानैत छथि। ओ तखने एकरा श्रेष्ठ मानताह जखन कोनो मैक्समूलर वा कोनो विलियम, कोनो राबर्ट, जोन्स प्रभृति आंग्ल नामधारी ओकरा श्रेष्ठ कहत। एहन हाहाकारी आत्महीनताकेँ तिलांजलि देबऽ पड़त। ई साँच जे जहिना आत्महीनता अनर्थकारी अछि तहिना आत्ममुग्धता सेहो अनिष्टकारी अछि। एहि अनिष्टकारी आत्ममुग्धतासँ सेहो पिण्ड छोड़बए पड़त। सन्तुलित दृष्टि राखब उचित। अपनाकेँ आधुनिक वा फैशनेबुल देखएबाक फेरमे अपन भाषा, परम्परा, संस्कृति आदिसँ कटि रहल समस्त भारतीयकेँ एहि कटु सत्यपर अवश्य चिन्तन करबाक चाही। भारतीय भाषामे सेहो श्रेष्ठ काज संभव अछि आ भऽ रहल अछि, एहिपर विश्वास करए पड़त।

एहि पोथीक तैयारीमे हमरा अन्तसमे एक भारी द्वन्द्व केर स्थिति रहय, एक शोधप्रज्ञ आ एक साहित्यकार मध्य केर द्वन्द्व। कखनो शोधप्रज्ञ साहित्यकारकेँ बजारि दैत छल तऽ कखनो साहित्यकार शोधप्रज्ञकेँ पछारि दैत छल। एहि द्वन्द्वसँ एक लाभ अवश्य भेल जे नीरस शोधमे रम्यता आओल आ नाटक केर संवादमे शोध सम्बलित सत्य। शोध आ सृजन सर्वथा दू पृथक् विधा थिक आ हम एहिमे दुनूक मध्य कतेक सामंजस्य राखि सकलहुँ एकर आकलन करबाक भार सुधी विद्वान् सभपर छोड़ैत छी।

एहि पोथीक रचना करैत काल महाकवि कालिदासक सृजन प्रक्रियासँ हमर साक्षात्कार भेल, एहन दावी नहि कएल जा सकैछ मुदा, प्रस्तुत नाटक केर छठम दृश्यमे जखन महाकवि कामसेनाक समक्ष सूर्यास्त कालक दृश्य केर शब्द चित्र सभ प्रस्तुत करैत छथि आ भोरमे कामसेनाकेँ सुनएलाक बाद जे बिम्ब हुनका सभसँ बेसी नीक लागत ओहिमे अपन मनोलयसँ अपेक्षित उन्नयन करैत अपन रचनामे सम्मिलित करबाक बात कहैत छथि, तखन एहिसँ महाकविक सृजन प्रक्रिया विषयक एक अनुमान अवश्य कएल जा सकैछ।

नाटकक एहि पोथीक एक-एक आखर केर मूल स्वर महाकविक मैथिलत्वक उद्घोष अछि। एहि पोथीक गणना नाट्यविधा अन्तर्गत होएत। ई कहैत

हमरा कनियो दुविधा नहि अछि जे कोनो एक नाटकक लेल एतेक श्रमसाध्य शोध कहियो भेल होएत! कदाचित् मैथिली नाट्यविधाक विस्तृत शोधाश्रित ई प्रथमे नाटक हो! महाकविक माटरामे महाप्रयाणपर आधारित एहि नाटक केर तीन प्रस्तुति भेल अछि। प्रथम मंचन उच्चैठ-कालिदास महोत्सव, 2019मे श्री बमबमजीक निर्देशनमे भेल आ दोसर-तेसर मंचन राज्य स्तरीय युवा समारोह, 2020मे सेहो श्री इन्द्रभूषण रमण बमबमजीक निर्देशनमे भऽ चुकल अछि।

सुप्रसिद्ध रंगकार श्री महेन्द्र मलंगिया प्रस्तुत नाटक विषयक अपन सकारात्मक सुझाओसँ अनुगृहीत कयलनि। तदनुसार नाटकमे परिमार्जन कयलहुँ। एहि पोथीक भूमिका लिखबाक कृपा मलंगियाजी कयलनि एतदर्थ हुनका प्रति आभार प्रकट करैत छी।

मिथिलामे संस्कृतक सभसँ पैघ पाग पं. शशिनाथ झा, कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा अपन शुभकामना संदेशसँ हमर मान बढ़ओलनि एहि लेल हुनका प्रति आदर सहित श्रद्धा निवेदित करैत छी।

मैथिली-हिन्दीक सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर डॉ. नरेश कुमार विकलजी अत्यन्त नेहपूर्वक समस्तीपुर जिला स्थापना दिवसपर 14 नवम्बर 2009कँ प्रकाशित स्मारिका 'उत्कर्ष'मे छपल अपन आलेख केर प्रति पठओलनि। ओ मिथिलामे महाकवि पोद्दार रामावतार अरुणक निर्देशनमे शिवरात्रि 10 मार्च 1956 ई.कँ प्रथम-प्रथम समस्तीपुरक पटेल मैदानमे आयोजित अखिल भारतीय महाकवि कालिदास समारोह विषयक जानकारी देलनि। एहि महोत्सवमे पं. अरुणजीक प्रबंध काव्य 'कालिदास' केर विमोचन सेहो भेल छल। विकलजी अरुणजीक आत्मकथ्यात्मक उपन्यास 'कालिदास की आत्मकथा' विषयक जानकारी सेहो देलनि। उल्लेखनीय अछि जे एहि आयोजन केर अकल्पनीय सफलतासँ अभिभूत महान् सारस्वत व्यक्तित्व पं. सूर्य नारायण व्यास केर सत्प्रयाससँ उज्जैनमे सेहो महाकवि कालिदास समारोह 1958 ई.मे आरम्भ भेल जेकर उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कएने छलाह। ओना पद्मभूषण पं. सूर्य नारायण व्यास अपना स्तरसँ महोत्सव केर आयोजन पहिनेसँ करैत छलाह। पं. व्यासजी समस्तीपुरक कालिदास महोत्सवमे स्वयं नहि आबि सकल छलाह मुदा एहि समारोह लेल हुनकर शुभकामना संदेश अवश्य आएल छल। एहि महोत्सवमे राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह (दरभंगा राज), दीवान बहादुर कामेश्वर नारायण सिंह (नरहन स्टेट), श्रीधर वासुदेव सोहोनी (आयुक्त), बिहार विधान सभाक पूर्व माननीय अध्यक्ष पं. हरिनाथ मिश्र, सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पूर्व प्राचार्य प्रो. पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र प्रभृति मनीषी सभक उपस्थिति छल। उत्तर प्रदेशक तत्कालीन महामहिम राज्यपाल आ सुविख्यात

साहित्यकार पं. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी (के एम मुंशी) एहि महोत्सव केर उद्घाटन कयने छलाह। बिहार सरकारक तत्कालीन माननीय सूचना मंत्री श्री महेश प्रसाद सिंह एहि महोत्सव केर स्वागताध्यक्ष छलाह। वृहत्तर पटेल मैदान दर्शक आ श्रोता सभसँ पूरा भरि गेल छल। 1956 ई.क एहि भव्य कालिदास महोत्सवसँ स्पष्ट अछि जे महाकवि कालिदास विषयक आयोजनमे मिथिला मध्य प्रदेशसँ दू डेग आगू अवश्य अछि। बिहार सरकार द्वारा राजकीय महोत्सव रूपमे वर्ष 2019सँ उच्चैठ कालिदास महोत्सव सेहो आरम्भ भेल अछि।

समस्तीपुर गजेटियर प्रकाशन कालसँ विकलजीक सहयोग आ आशीर्वाद भेटैत रहल अछि। विकलजीक सारस्वत सहयोगक लेल आभार प्रकट करैत छी। ठाम-ठाम संस्कृतक क्लिष्ट पदमे ओझरा गेलापर अपन दिशा-निर्देश आ आलोकसँ दुर्गम मार्गकेँ सुगम कयनिहार डॉ. रामचन्द्र ठाकुर, पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभागक प्रति अपन कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी।

एहि पोथीक मुखपृष्ठ श्री मिथिलेश कुमार, भा.प्र.से. (से.नि.) तैयार कयने छथि। महाकविक महाप्रयाण विषयक एहन प्राणवन्त आ मनभावन चित्रक लेल आदरणीय मिथिलेशजीक प्रति प्रणाम निवेदित करैत छी। एहि चित्रकेँ अपन पोथीक मुखपृष्ठपर स्थान दैत हम आनन्दक अनुभव करैत छी, प्रमुदित छी। अनेकशः साधुवाद श्रीमन्!

अपन सुझाओ विशेष रूपसँ उज्जैन विषयक अनुभवसँ मनोबल बढ़ओनिहार चेन्नईवासी मैथिल श्री ईश्वर करुणजीक प्रति विशेष स्नेहयुक्त आभार प्रकट करैत छी।

हम ओहि समस्त महानुभावक प्रति अपन आभार प्रकट करैत छियनि जिनकर कोनो तरहक सामग्री (प्रकाशित-अप्रकाशित, ऑनलाइन वा ऑफलाइन) केर उपयोग कयलहुँ। पासपोर्ट आदि तैयारीक बादो हमर माटरा भ्रमणक योजना कोरोना प्रकोपसँ फलीभूत नहि भऽ सकल एकर कचोट अछि। महाकविक चितास्थलीपर किछु निर्माण वा दू पुष्प अर्पित करबाक सेहन्ता पता नहि कहिया आ कोना पूर होयत!

कोनो प्रकारक अशुद्धि आ कोनो तरहक त्रुटि सभक लेल सुधी पाठकगणसँ क्षमायाचना करैत छी।

एहि पोथीक रचना कालमे गृहकार्यक जंजाल सभकेँ स्वयं सम्हारि एहि सभसँ हमरा मुक्त राखि सहधर्मिणी श्रीमती रेखा चौधरी महाकविक वन्दना लेल जे एकान्त समय उपलब्ध करओलनि ओ हमरा आ एहि पोथीक लेल सरिपहुँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

बिहारक एकमात्र दाण्डी यात्री 'मैथिल गाँधी' गिरिवरधारी चौधरी (कारो बाबू)क यशस्वी भातिज आ अनेक पोथी सभक रचयिता ऋषितुल्य रमापति चौधरीक कर्मनिष्ठ सुपुत्र अवकाशप्राप्त अपर सचिव श्री श्यामानन्द चौधरी (मोहनजी) अपन सुझाओसँ एहि पोथीक श्रीवृद्धिमे अमूल्य योगदान देलनि। हुनका सादर प्रणाम करैत छी।

अल्प समयमे राति-राति भरि हमरा संगे जागरण करैत श्री दीप नारायणजी एकर प्रकाशन ससमय आ एतेक सुन्दर ढंगसँ कयलनि एहि लेल श्री दीप नारायणकैँ हृदयसँ धन्यवाद दैत छी आ हुनक समस्त सपना, आशा वा इच्छा साकार होइत हुनक सहचरी बनए से आशीर्वाद दैत छियनि।

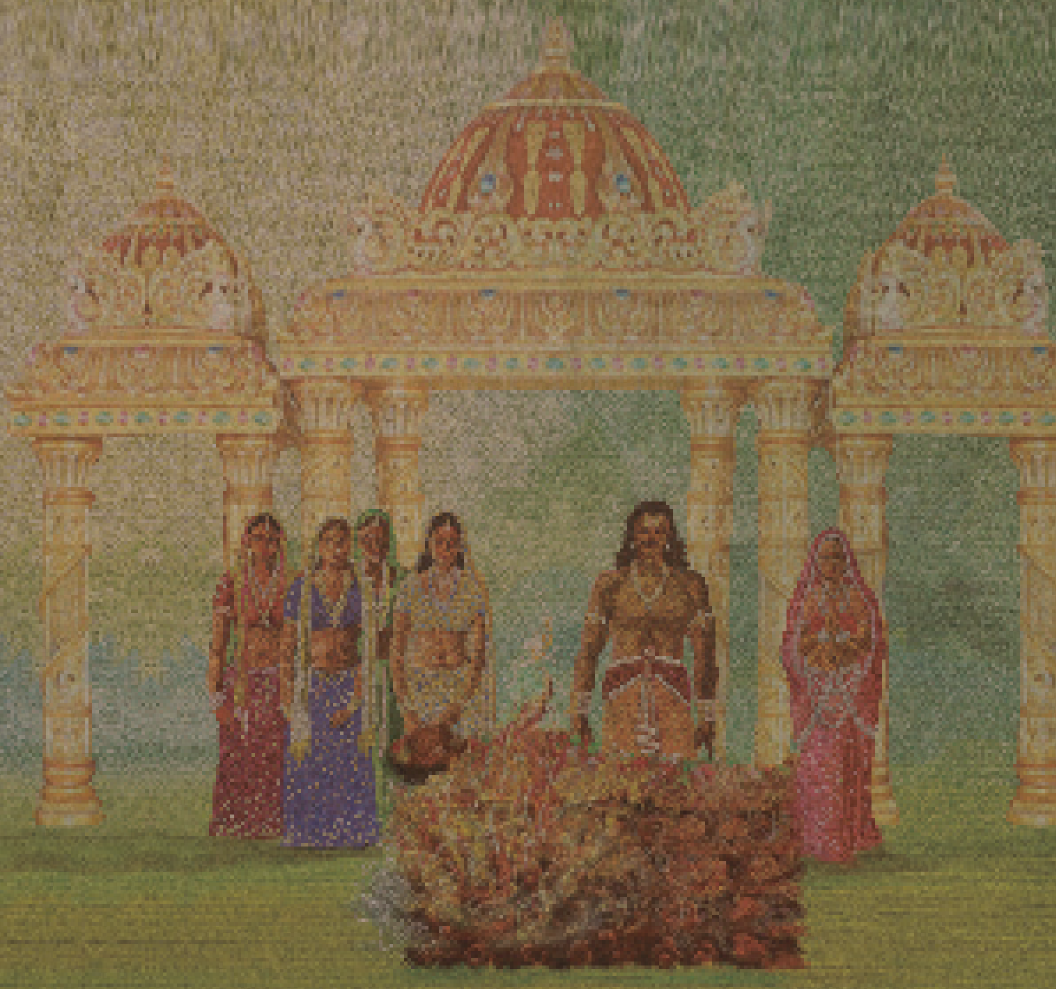
स्मृतिशेष पिता जगन्नाथ चौधरीक पुण्य पर्व (24 अप्रैल)पर हमसभ समारोहपूर्वक 'सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी सम्मान' मिथिला-मैथिलीसँ संबंधित स्तरीय शोधपर एक शोध विद्वान् कैँ दैत छी। अखन धरि ई सम्मान सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नरेश कुमार विकल (2018) आ सुधी शोध विद्वान् श्री भैरव लाल दास (2019)कैँ प्रदान कयल गेल छनि। 2020मे ई सम्मान लोक चेतनाक पुरोधा डॉ. महेन्द्र नारायण रामकैँ देबाक नेयार छल मुदा कोरोनाक कारणेँ कार्यक्रम संभव नहि भेल। एहि बेर ई सम्मान हुनका देल जा रहल अछि।

महाकवि कालिदासपर रचित एहि पोथी विषयक कोनो सुझाओ वा प्रतिक्रिया केर स्वागत करब।

एक बेर फेर महाकवि कालिदासक स्मृति केर वन्दना करैत छी।

'जय-राम', सुलतानपुर
सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी महाप्रयाण दिवस
24 अप्रैल 2022

विदुषां वशंवद
रंगनाथ दिवाकर
(रंगनाथ दिवाकर)



महाकविक महाप्रयाण

मैथिली नाटक

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

1. कालिदास : भारतवर्षक सुप्रसिद्ध महाकवि
2. कुमारदास : सिंहल देशक राजकुमार आ राजा
3. पण्डित 1 : सुप्रसिद्ध वररूचि
4. पण्डित 2 : पण्डित 1 केर शिष्य, विद्योत्तमासँ विवाहक आकांक्षी
5. अनुचर : पण्डित सभक चाकर
6. नट : नाटक केर सूत्रधार
7. राजा : विद्योत्तमाक पिता
8. चारण : सिंहल नरेशक सेवक
9. सभासद 1
10. सभासद 2
11. कित्तीसेना : कुमारदासक पुत्र, सिंहल देशक राजकुमार

स्त्री पात्र

1. विद्योत्तमा : सुप्रसिद्ध विदुषी आ राजकुमारी
2. प्रियंवदा : विद्योत्तमाक परिचारिका
3. कामसेना : सिंहल देशक राजनर्तकी
4. रानी : विद्योत्तमाक माता
5. नटी : नट केर प्रिया

6. परिचारिका : विद्योत्तमाक परिवारक दू परिचारिका
(आवश्यकतानुसार अतिरिक्त किछु पुरुष पात्र राजाक सभामे आ सिंहल नरेश कुमारदासक सभामे बैसि सकैत छथि)

दृश्य- एक

(नाटक लेल तैयार रंगमंच। मंचक बामा कात एक पर्दा लागल अछि। अखन मुख्य मंचसँ ओम्हर नहि गेल जा सकैछ। मंचक समानान्तर बामा कात एक लघुमंच अछि जाहिपर पर्दा खसल अछि। मुख्य मंचक पर्दा उठैत अछि। एक कातसँ नट आ दोसर कातसँ नटीक हाथ जोड़ने प्रवेश होइत अछि)

नटी : जय हो! जय हो!! आइ समय केर पैघ अन्तरालक बाद हम सब एतऽ पुनः एकत्र भेल छी।

नट : हँ। आइ हम सब महाकवि कालिदासपर आधारित एक लघु नाटिकाक आनन्द लेब...

नटी : वैह महाकवि कालिदास ने जिनका विषयमे कहल गेल अछि—
पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास:
अद्याततुल्यकविर्भावात् अनामिका सार्थवती बभूव

नट : हँ प्रिये! वैह महाकवि कालिदास! मिथिलाक वरद् पुत्र कालिदास! उच्चैठ भगवतीक उपासक कालिदास। प्राचीन कवि सभक गणना जँ कँगुरिया आँगुरसँ आरम्भ करी तऽ दोसर स्थानपर किनको नाम आबि नहि सकत तेँ एहि आँगुरक नाम अनामिका सार्थक भेल। **(गिनती करबाक अभिनय। अनामिका आँगुरक प्रदर्शन)**

नटी : आह की दिव्य दिवस अछि आइ! महाकवि कालिदासक अद्‌भुत जीवनचरित् सँ हमरा सभक साक्षात्कार होयत।

नट : हँ प्रिये! अद्‌भुत जीवनचरित्! जेहने महाकविक विलक्षण काव्य तेहने मोनहरू हुनक जीवनयात्रा।

नटी : से की ?

नट : महाकविक जन्म मिथिलामे भेल, वज्रमूर्ख छलाह। जाहि डारिपर बैसल छलाह ओकरे काटैत छलाह, छलपूर्वक राजकुमारीसँ विवाह भेल, तिरस्कार भेटल, उच्चैठ भगवतीक कृपासँ विद्यादान भेटलनि, अध्ययनमे रूचि भेलन्हि आ सर्वश्रेष्ठ महाकवि रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। जन्म मिथिलामे आ मृत्यु सिंहल देशक माटरामे...

नटी : **(आश्चर्यचकित)** अँय! जन्म मिथिलामे आ मृत्यु एतऽसँ हजारो कोस दूर श्रीलंकाक शहर माटरामे! परम आश्चर्यजनक आ मनोरंजक कथा अछि। हमर जिज्ञासा अत्यधिक बढ़ि गेल अछि प्रिय! मिथिलासँ माटरा धरिक ई जीवन यात्रा... ओह!

नट : हँ प्रिये...

नटी : ओह! महाकविक महाप्रयाण श्रीलंकाक माटरा शहरमे कोना भेल? ओ सागर लंघन किए कयलनि? हमर जिज्ञासा आब चरमपर पहुँचि गेल अछि, व्याकुल आ विह्वल भऽ रहल छी हम। प्रिय! बिनु एक पल नष्ट कएने हमरा महाकवि कालिदासक जीवन यात्राक सब रहस्य बता हमर उद्विग्नता शान्त कएल जाय।

नट : अवश्य प्रियतमे! आइ स्वयं दिवाकर महाकवि कालिदास विषयक कथा कहि रहल छथि। अहाँक समस्त जिज्ञासा अवश्य शान्त होयत। बस मनोयोगपूर्वक एहि नाटिकाक आनन्द लेल जाय।

नटी : अवश्य प्रिय! **(नेपथ्यसँ कोलाहल केर स्वर अभरैत अछि)** अँय! ई कोलाहल किए?

नट : **(कानपर हाथ राखि अकानैत)** ओह! जेना दूरसँ चिकरा-भोकरीक स्वर आबि रहल अछि। ओहिना जेना किछु गोटे तम-तमायल आबि रहल हो। कोनो कोना धऽ ली हम सभ। क्रोध विपत्तिक कारण भऽ सकैत अछि। ई कोलाहल कथीक? की नाटक शुरू भऽ गेल?

(नट-नटी एक कोनासँ ससरि जाइत छथि आ दोसर कातसँ रेशमी परिधानमे दू पण्डित आ साधारण वस्त्रमे अनुचरक प्रवेश)

अनुचर : **(हकमैत)** रौ बाप रौ बाप! गै माय गै माय! देखू तऽ यैह! ओह! एहन जब्बर छौंड़ी नहि देखने रही। सब विद्वान् सभक कान काटि लेलक। सभकँ पानि पिआ-पिआकँ पस्त कएलक। जियह हे बवुनी! वाह की दिव्य रूप! की अद्भुत गुण! तिल-तिल उत्तम तिलोत्तमा! आह की मधुर स्वर! की उत्तम विद्या विद्योत्तमा!! देखू तऽ यैह!

पण्डित 1 : अरे मूढ़ अनुचर! तौँ चुप रह। एक तऽ विद्योत्तमा हमरा सभक एहन अपमान कएलक आ तौँ ओकर गुणगान कऽ हमरा सभक जरल करेजापर नोन छीटि रहल छैँ?

पण्डित 2 : हमर तऽ ओ सत्यानाशे कएलक। सब गुड़ गोबर कऽ देलक। तेहन जिह्वा बान्हलक जे हम ब्रह्म आ जीवमे की पार्थक्य सन सरल प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकलहुँ।

अनुचर : ओकर अपरूप रूप निहारैसँ फुर्सत हो तखन ने उत्तर फुरायत। बूझल नहि अछि जे ओहिनो गोर मोउगि गौरवे आन्हर होइ छै आ जखन भगवान् ओहन दिव्य रूप परसँ गुण सेहो हुनका

देलनि तखन ओ की करतीह से सोचल जाय। ओह! जेहने अपरूप रूप तेहने विलक्षण गुण। देखू तऽ यैह!

पण्डित 1 : पता नहि अपना आपकेँ की मानै छैक! जेना भगवती दुर्गा प्रण कयने छलीह—

यो मे जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥

तहिना इहो निर्णय कयलक जे जे हमरा शास्त्रार्थमे पराजित करत ओकरेसँ विवाह करब। जीविते भगवती बनतीह। हुँह!

अनुचर : आ हा हा! गेल रही शास्त्रार्थमे पराजित कऽ बियाह करऽ। की भेल? भकचोन्ही लागल ने? देखू तऽ यैह! अरे ओ साक्षात् भगवतीक अवतार छथि आ अहाँ सभक जोड़ी तऽ शुम्भ निशुम्भक जोड़ी ने भेल? शास्त्रार्थ काल तऽ ठकमुरी धेने छल आब की तरुवारिसँ मरब अहाँ सब! कठजीव नहितन!

पण्डित 2 : अधम अनुचर! चुप रह। महाराजक आचार्य रत्न आ हमरा सन प्रकांड पंडितकेँ शुम्भ-निशुम्भ कहबाक धृष्टताक कारणेँ एक शिकायतपर तोरा प्राणदंड भेटि सकै छौ।

अनुचर : देखू तऽ यैह... यौ! यैह ने भेल बापक नाओँ लत्तीफत्ती आ बेटाक नाओँ परोर! इह! चाइनपर केश नहि माथपर ककबा! फेर कहै छी सुनू। अपन हारल आ बहुकेँ मारल लोक नहि बाजै छै कतहु। चुप्पे रहू।

पण्डित 1 : कोना चुप रही? शास्त्रार्थमे पराजय केर दंश तोँ नहि बुझि सकैत छेँ रे मूर्ख। शस्त्रसँ भेल घाओ वा पराजय मात्र तनपर होइ छै, समयक संग भरि जाइत छैक मुदा शास्त्रार्थमे पराजय मनपर

होइत छैक, ओ कहियो नहि भरैत छैक। शस्त्रसँ पराजयमे कदाचित् एहन मर्मान्तक पीड़ा नहि भेल रहैत जेहन आइ शास्त्रमे पराजयसँ भेल आ ओहो एक स्त्री द्वारा! छिया छिया! हे महादेव! की करी जे चित्त शान्त हो।

पण्डित 2 : गुरुवर! एक उपायसँ हमरा सभक धधकैत करेजकेँ शीतलता भेटि सकैत अछि। घमंडी विद्योत्तमाक विवाह कोनो वज्रमूर्खसँ करा हम सब अपन प्रतिशोध पूर्ण कऽ सकैत छी।

पण्डित 1 : से कोना ?

(पण्डित 1 पण्डित 2 केर कानमे किछु कहैत छथि। अनुचर उचकिकेँ सुनबाक प्रयास करैत अछि तऽ दुनू पण्डित ओकरापर तमतमा जाइत छथि। नेपथ्यमे टेँगारीसँ किछु काटबाक आवाज अबैत अछि।)

पण्डित 2 : **(टेँगारीक अबैत आवाज दिशि अकानैत)** हम कने अबैत छी। **(दोसर पण्डित मंचसँ विदा होइत छथि। आ लगले आपस आबि जाइत छथि। हुनकर संग हाथमे टेँगारी आ किछु जारनि नेने कलुआ सेहो अछि।)**

पण्डित 2 : **(मुस्की दैत)** गुरुवर! एकटा जड़ी देखऽ गेल रही मुदा अनुपम दृश्य देखि मोन तृप्त भऽ गेल। ई नवयुवक जाहि डारिपर बैसल छल ओकरे काटि रहल छल। खसत तऽ हाड़-पाँजड़ छिटकि जेतै, यमलोक जा सकैछ तेकर कोनो ज्ञान नहि छल एहि मूर्खकेँ। एकरासँ पैघ मूर्ख कोइ दोसर आन नहि भऽ सकैछ। हमरा सभक प्रतिशोधक लेल सर्वथा उपयुक्त पात्र अछि ई मूर्खराज! **(दुनू पण्डित हँसैत छथि आ कलुआकेँ टेबैत छथि। अनुचर विचित्र मुद्रा बना उपहास करैत अछि)**

पण्डित 1 : अरे ई की करै छलहुँ यौ? की नाम अछि?

कलुआ : हम कलुआ। देखै नहि छी जे जारनि लाबय गेल रही। हम जारनि लऽ के जेबै तखन माय भानस करतै तखने भोजन भेटत। हमरा दिक् नहि करू। हमरा अपन काज करऽ दियऽ।

पण्डित 2 : आजुक बाद अहाँकेँ कहियो कोनो काज नहि करऽ पड़त। अहाँक विवाह राजकुमारीसँ होयत।
(राजकुमारीसँ विवाहक बात सुनिते मातर कलुआ टँगारी आ जारनि फेकि सभकेँ प्रणाम करैत अछि।)

पण्डित 1 : अहाँ आब राजमहलमे रहब। दास-दासी सब अहाँक सेवामे सदिखन कऽल जोड़ने ठाढ़ रहत।

कलुआ : जय माँ उच्चैठ भगवती! माँ...

पण्डित 2 : अहाँक माँ सेहो संगे रहती। बस शर्त्त एक्के टा अछि जे अहाँ वैह करबै जे अहाँके हमसभ कहब। काजो पैघ नहि मात्र अहाँके एक दिनक लेल मौनव्रत धारण करऽ पड़त।

कलुआ : मउन वरत! ई की होइ है?

अनुचर : देखू तऽ यैह! अरे बौक बनऽ पड़त।
(कलुआ मुड़ी डोलबैत अछि)

पण्डित 1 : जखन हम संकेत करब तखन अहाँ राजाकेँ ॐ नमः शिवाय कहि आशीर्वाद देबै बस फेर मौन व्रत धारण कऽ लेबाक अछि। की ई कऽ सकैत छी ने?
(कलुआ विनम्रतापूर्वक झुकिकेँ मुड़ी डोला स्वीकृति दैत अछि। फेर कखनो ओना मासी धं, कखनो ओनम शिव, कखनो उशंरटं, कखनो सम्बलाय, कखनो शिवशिवाय कहि अभ्यास करैत अछि फेर एकदमसँ मौनी बाबा भऽ जाइत अछि।)

पण्डित 2 : अरे वाह! ई तऽ अखनेसँ मौनी बाबा भऽ गेल।

अनुचर : धन्य-धन्य हे उच्चैठ भगवती। कलुआक कपारमे कारी खोरनाठो कनिञा नहि लिखल छलै। कहियासँ एकर माय एकर बियाहक लेल अपस्याँत छलै, कतेक कबुला पाती केलक, जोड़ा छागर गछलक आ देखू तऽ यैह! सब भगवतीक कृपा। कहाँ करिकीओ कनिञा नहि आ कहाँ गोरकी राजकुमारीसँ बियाह! वाह वाह! देखू तऽ यैह!

पण्डित 1 : तौँ चुप रह!

अनुचर : देखू तऽ यैह! मुदा हे यौ पंडीजी सब! अहाँ सभकेँ उच्चैठ भगवती जान नहि छोड़तीह जे एहन अनुचित बियाह करा रहल छिऐ। ई महापाप अछि। कहाँ ओ सर्वगुण संपन्न सुन्दरी आ कहाँ ई निपट मूर्ख चपाट। एहन बेमेल बियाह करबै वला रौरव नरक जएबे टा करत। देखू तऽ यैह!...

पण्डित 1 : तौँ किछु नहि बाजह।

पूर्व जन्म उपार्जित विद्या पूर्व जन्म उपार्जित धनम्
पूर्व जन्म उपार्जित नारी अग्रे-अग्रे धावत्।

पूर्व जन्म उपार्जित विद्या, धन वा स्त्री आगू-आगू चलैत अछि। भगवतीक कृपा हेतै तऽ कलुआ सेहो विद्वान् भऽ जेतै। चिंता जुनि करू। हिनका लेल रेशमी वस्त्र आनू, स्नान करा हिनकर साज-श्रृंगारक व्यवस्था करू। शीघ्रता करू बहुत काज करबाक अछि।

(सभक प्रस्थान। यवनिका पात)

दृश्य- दू

(राजसभाक दृश्य। सोचमग्न राजा, मंत्रीगण आ श्रृंगार कएने प्रफुल्लित विद्योत्तमा बैसलि छथि। तीन आसन रिक्त। दुनू पंडित आ रेशमी परिधानमे सुशोभित कलुआक प्रवेश।)

पण्डित 1 : महाराजक जय हो। हमरा ज्ञात अछि जे अखन अपनेक वैह दशा अछि जे जानकी स्वयंवरमे धनुर्भंग करबामे असमर्थ राजा सभकेँ देखि महाराज जनक केर छल।

राजा : विवाह योग्य पुत्रीक पिता होएब ओहिनो चिन्ताक कारण होइत अछि आ जँ सुयोग्य पुत्री प्रण करए जे शास्त्रार्थमे पराजित कयनिहारेसँ विवाह करब तखन चिन्ता आर बढ़ि जाइत अछि। शास्त्रार्थमे विद्वान् सभक पराजयसँ अत्यधिक निराश आ दुखी छी हम।

पण्डित 1 : राजन्! अपनेक समस्या केर सुन्दर समाधानक संग हमसभ उपस्थित छी। ई छथि कण्व गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ स्नातक कालि। सुदर्शन, सदाचारी, उच्च कुल-गोत्र आ सर्वगुणसंपन्न सुशील एहि नवयुवक केर जिह्वापर स्वयं सरस्वती विराजमान छथि। सकल शास्त्र कंठाग्र छैन्हि एहि धीर आ वीर युवककेँ। हिनका *अग्रत: सकलं शास्त्रं पृष्ठत: सशरं धनु:* केर साक्षात् प्रतिमूर्त्ति कहल जा सकैत अछि। **(कलुआ विनम्रता पूर्वक राजाक अभिवादन करैत अछि आ राजा हुनका आ पण्डितगणकेँ आसन दैत छथि। विद्योत्तमा नेहपूरित नजरिसँ कलुआकेँ देखैत छथि।)**

राजा : हम अति आनन्दक अनुभव कऽ रहल छी। आगू जे भगवतीक इच्छा।

पण्डित 1 : मात्र एक समस्या अछि जे अखन एहि पण्डित केर मौन व्रत चलि रहल अछि तेँ शास्त्रार्थ मात्र संकेतसँ संभव अछि।

विद्योत्तमा : आचार्य! एक प्रहर पूर्व अपने अपन सर्वश्रेष्ठ शिष्यक संग शास्त्रार्थ सभासँ पराजित आ अप्रसन्न भऽ आपस भेल रही। पुन: अयलहुँ अछि। एतेक शीघ्र हरिद्वार लऽग अवस्थित कण्व गुरुकुल केर स्नातक कोना भेटि गेलाह? ई कोनो षड्यंत्र तऽ नहि अछि ने?

पण्डित 1 : राम राम! शिव शिव! ई कोनो षड्यंत्र नहि अछि राजकुमारी। पण्डित गाम आएल छलाह आ हमरा सभकेँ भेटि गेलाह। हिनकर मौनव्रत अछि अखन तेँ राजन केर अभिवादनमे एक-दू शब्दक अतिरिक्त आर किछु नहि बजताह अन्यथा हिनक मौनव्रत खंडित होयत। महर्षि कण्वक गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ स्नातक छथि ई। साधनासँ सिद्धि केर सिद्धान्तक अनन्य उपासक। पण्डित प्रवर कालि! राजन् केर अभिवादन कएल जाय।
(संकेत पाबि कलुआ ॐ नम: शिवाय कहबाक प्रयास करैत छथि मुदा किछु मोन नहि पड़ैत छैन्हि। कहुना मात्र उशंरटं बजैत छथि। सभा स्तब्ध।)

पण्डित 1 : राजन्! सभामे सभासद् गण स्तब्ध छथि जे पण्डित प्रवर की कहलनि। यथार्थमे ओ एहि श्लोकसँ अपनेक अभिनन्दन कयलनि अछि—

उमयो सहितो रुद्र:
शंकर: शूलपाणिभृत्।
रक्षतु त्वां महीपाल
टंकार बलगर्वित:।।

अर्थात् हे टंकार बलगर्वित राजन्! रुद्र शंकर, जे हाथमे त्रिशूल धारण कएने छथि आ उमा संग छथि, अहाँक रक्षा करथि। अपन मौनव्रतक कारणेँ पण्डित प्रवर पूरा पद नहि पढ़ि मात्र चारू पद केर आद्याक्षर जोड़ि एक शब्द उशंरटंसँ अपनेक अभिवादन कयलनि।

(सभासद सब वाह वाह, अद्भुत, विलक्षण, जय हो जय हो कहि पण्डित प्रवर केर सम्मान करैत छथि। राजा आ विद्योत्तमा मुदित छथि।)

विद्योत्तमा : जेहन अपनेक इच्छा आचार्य! हम सांकेतिक शास्त्रार्थ शुरू करैत छी। हमर संकेतक भाव स्वयं हिनका समझऽ पड़त आ तदनुसार उत्तर अपेक्षित रहत। हमर प्रथम प्रश्न अछि...

(अपन तर्जनी आँगुर कलुआ दिशि बढ़ा दैत छथि। कलुआ पहिने अपन एक आँखि फेर दोसर आँखि झँपैत अपन तर्जनी आ मध्यमा आँगुर विद्योत्तमाकेँ देखबैत छथि जे तोँ जँ हमर एक आँखि फोड़बाक बात करबेँ तऽ हम तोहर दुनू आँखि फोड़ि देबौ।)

पण्डित 1 : वाह वाह! की सुन्दर प्रश्न आ की विलक्षण उत्तर! राजकुमारी! अपनेक प्रश्न यैह ने छल जे ब्रह्म एक छथि? (राजकुमारी मुड़ी डोला स्वीकृति दैत छथि) आब पण्डित प्रवर केर उत्तर देखल जाय। दू आँगुरसँ ओ संकेत करैत छथि जे ब्रह्मक संग जीव केर सत्ताकेँ नकारल नहि जा सकैछ। अपने अद्वैतक गप्प करैत छी से उचित नहि। ईश्वर अलग ब्रह्म छथि तऽ जीव केर पृथक् अस्तित्व अछि। ब्रह्म आ जीव केर पृथक्-पृथक् अस्तित्व अछि तेँ अद्वैतकेँ एतऽ नहि मानल जा सकैछ।

विद्योत्तमा : अद्वैत भारतीय दर्शन केर आत्मा थिक। एकरा नकारल जा सकैछ की?

पंडित 1 : आत्मा अवश्य अछि मुदा सृष्टिक लेल द्वैत सेहो आवश्यक अछि। द्वैतक अस्तित्व रहत तखने अद्वैतक अस्तित्व बाँचत। प्रकृति आ पुरुष अनादि अछि मुदा दुनूक पृथक् सत्ता अछि। गीताक अध्याय 13 श्लोक 19मे भगवान् कृष्ण कहैत छथि—

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादि उभावपि
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवाम्

सब गुण आ विकार मात्र प्रकृतिसँ निष्पन्न होइत अछि पुरुषसँ नहि। पुरुष तऽ मात्र ओकर भोक्ता अछि। तैँ प्रकृति आ पुरुषकेँ संग रहब आवश्यक अछि। बिनु प्रकृति ब्रह्म कोनो सृजन नहि कऽ सकैत छथि। ओ योगमाया शक्ति आवश्यक अछि जेकरा बलेँ ब्रह्म सृजन हेतु सक्षम होइत छथि। संसारमे कोनो स्त्री वा कोनो पुरुष एसकरे संतानोत्पत्ति नहि कऽ सकैछ। सृष्टि वा सृजनक लेल दूनूक संयोग आवश्यक अछि।

विद्योत्तमा : ब्रह्म जे सृष्टि करैत छथि से सब सृष्टि कल्पान्तमे फेर ब्रह्ममेमे समाहित् भऽ जाइत अछि तैँ जीव ओहि ब्रह्म केर अंश मात्र अछि। यद्यपि देखलासँ ओ ब्रह्मसँ पृथक् लगैत अछि किन्तु यथार्थमे ओकर कोनो पृथक् अस्तित्व नहि अछि।

पंडित 1 : सत्य कहल राजकुमारी! ई सत्य जे ब्रह्म सृजन करैत छथि। गीतामे भगवान् श्रीकृष्ण कहैत छथि— *अहं बीजप्रद: पिता* अर्थात् हमही बीज दएनिहार पिता छी। तथापि जँ कोइ बीज धारण कयनिहारि नहि हो तऽ सृजन संभवे नहि अछि। अन्न सेहो बीज अछि मुदा ओ तखने फलवती होइत अछि जखन पृथ्वी माता ओकरा अपन गर्भमे धारण करैत छथि आ फेर अन्नक सृजन होइत अछि। द्वैतमे 'अ' केर संयोग भेलासँ अद्वैत बनि जाइछ। यैह द्वैताद्वैत अर्द्ध नारीश्वरक परिकल्पनाक मूलाधार थिक। तहिना शिव आ शक्तिक संयुक्त रूप अर्द्धनारीश्वर मूर्त्ति सृजन केर आधार अछि। दू नहि तऽ एक केर कोन मोल? आत्मा नहि तऽ परमात्माक कोन महत्त्व? भक्त नहि तऽ भगवान् कतऽ? राजकुमारीजी! अपनेक मूलप्रश्नक तीर तऽ पण्डित प्रवर कालिक विद्वत्ता रूपी ढालसँ टकरा खंडित भऽ गेल अछि। आब जयमाल आनल जाय। ऋषि कण्व केर सर्वश्रेष्ठ शिष्यक जय हो! जय हो!!
(सब चकित भऽ पण्डित प्रवर केर जय-जयकार करैत छथि)

विद्योत्तमा : **(हाथ उठबैत)** कृपया शान्त रहल जाय। अपन प्रथम प्रश्नक वैदुष्यपूर्ण आ विस्तृत उत्तरसँ हम पूर्ण संतुष्ट छी आ अपन स्थापनाक खंडन स्वीकार करैत छी। हम जे आब दोसर प्रश्न करब तेकर संक्षिप्त उत्तर देल जाओ। हमर दोसर प्रश्न अछि...

(राजकुमारी अपन पंजा कलुआकेँ देखबैत छथि। कलुआ अपन एक पंजाक पाँचू आँगुरकेँ बेराबेरी दोसर हाथक आँगुरसँ गानबाक अभिनय करैत अछि आ फेर अपन मुट्ठी राजकुमारीकेँ देखबैत अछि जे जँ तोँ हमरा चाँटा मारलेँ तऽ हम तोरा मुक्का मारबौ।)

पण्डित 1 : हर हर महादेव! राजकुमारी! अपने जे अपन पाँच आँगुरसँ पंचभूतक बात कएल ओकरा कटैत पण्डित प्रवर केर कथन अछि जे ओ सभमे एक्के टा तत्त्व अछि। अपने क्षिति, जल, पावक, गगन आ समीरक कथा कहलहुँ अछि। एहिपर पण्डित प्रवर केर कथन अछि जे ई पाँचू तत्त्वे मिलि एक शरीर बनबैत अछि, एकहि जगतीक निर्माण करैत अछि। एहि सभक मूल तत्त्व एकहि अछि। तेँ पण्डित प्रवर केर कथन अछि जे पंचभूतमे एके टा आदि तत्त्व अछि। जेना कोनो तत्त्वक सूक्ष्म कण अणुसँ बनल अछि, ई अणु सेहो परमाणुसँ निर्मित अछि। परमाणुक सेहो विखंडन संभव अछि मुदा जेना ओहि विखंडनमे सेहो अणु आ परमाणुक मूल तत्त्व वैह रहैत अछि जे संबंधित पदार्थ वा तत्त्व केर रहैत अछि। ठीक यैह स्थिति पंचतत्त्व केर सेहो अछि आ तहिना पंचभूतोक आदितत्त्व एक्के अछि। जहिना पंचभूतसँ एक शरीर तहिना पाँच आँगुरसँ एक मुट्ठी। आबहु कोनो संशय राजकुमारीजी ?

(विद्योत्तमा मुड़ी हिला इन्कार करैत लाजे लाल भऽ जाइत छथि। सब कण्व गुरु कुलक सर्वश्रेष्ठ स्नातक केर जय हो, विदुषी विद्योत्तमाक सुयोग्य वर कालि केर जय हो आदि उद्घोष करैत छथि। राजा उठिकेँ कलुआकेँ हृदयसँ लगा आशीष दैत छथि। एक थारमे राखल सजाओल दीप आ ओतहि राखल विभिन्न प्रकारक पँखुरी उठा पुष्पवर्षा करैत एक परिचारिका आ दोसर थारमे पँखुरीसँ सजाओल तामामे ललका धान, अक्षत आ दुर्वादल नेने पुष्पवृष्टि

करैत दोसर परिचारिकाक पाछू सखी प्रियंवदा आ रानी दू थारमे जयमाल नेने प्रवेश करैत छथि। विद्योत्तमा आरतीक थार परिचारिकासँ लैत कालि केर आरती करैत छथि, टीका लगबैत छथि आ फेर विद्योत्तमा एवं कालि एक दोसराकेँ जयमाल पहिराबैत छथि। उपस्थित सब गोटे तामासँ दुर्वाक्षत लऽ मंत्र पढ़ैत छथि—

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिःपुरन्ध्रियोर्षा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्त्व। दीर्घायु भव! सौभाग्यवती भव...

दुर्वाक्षत् मंत्र पढ़लाक बाद सब गोटे दुबि-धान-अक्षतसँ नव वर-वधूकेँ आशीर्वाद दैत छथि। दुनू परिचारिका पुष्पवृष्टि करैत छथि।)

प्रियंवदा : राजकुमारी विद्योत्तमाक प्रण पूर्ण भेल। आइसँ हुनक विवाहोत्सव आरम्भ भऽ गेल अछि। राज्य भरिमे समारोह, महोत्सव, कार्यक्रमादिक भारी धूम रहत। सब एहि महोत्सवमे मग्न आनन्द लेत। मुदा हाय रे हमर भाग्य! हम की करू? हम मातृ-पितृ हीना नेनपनेसँ विद्योत्तमाक संग छी। छी तऽ हम साधारण अनुचरी मुदा विद्योत्तमा शुरूसँ हमरा अपन सखीक मान देलनि, कहियो नौड़ी अनुचरी नहि माननलि। हमर तऽ जीवनाधारे विद्योत्तमा छथि। एक पलक लेल कहियो हुनकासँ अलग नहि रहलहुँ। आब की होयत हे विधाता! विद्योत्तमासँ वियोग हम सहि नहि सकब हमर प्राणान्त निश्चित अछि।

(प्रियंवदा विद्योत्तमाक गर्दनि पकड़ि कानऽ लगैत अछि।)

राजा-रानी ढाढ़स दैत कहैत छथि- तोरो एकरे संग विदा करबौ। कालि मुस्कुराइत छथि)

(यवनिका पात)

दृश्य- तीन

(राजमहल केर एक कक्षमे सोहाग सेज सजल अछि। विद्योत्तमा पटोर पहिरने प्रफुल्लित बैसलि छथि। सोझाँमे एकटा बिछान भूमिपर सजल अछि। नव वस्त्राभूषणमे सजल कलुआक प्रवेश।)

विद्योत्तमा : ओना एहि क्षेत्रमे कोबरामे पहिने स्वामी टोकैत छथि नवविवाहिताकेँ मुदा अहाँक मौनव्रत आ हमरा-अहाँक पूर्वमे भेल वार्त्ताक कारणेँ हम स्वयं आगू बढ़ि अहाँक स्वागत करैत छी। सुस्वागतम प्रियवर! विद्योत्तमाक हृत्पटलपर अपन तीक्ष्ण मेधा आ अतुलित तर्कशक्तिसँ राज कयनिहार महर्षि कण्व गुरुकुलक सर्वश्रेष्ठ स्नातक कालि केर जय हो। सुस्वागतम प्राणनाथ!
(कलुआ चुपचाप हुनका लऽग ठाढ़ भऽ जाइत छथि।)
प्रियवर! आब चुप किएक छी? अहाँक मौनव्रतक सार्थक समाप्तिपर बहुत-बहुत बधाइ स्वामी! एहि मौनव्रतक बादे हमरा सभक मिलन विधाता स्थिर कयने छलाह, से लगैत अछि। आब अपन मुखारविन्दसँ अपन किछु आर विशेष परिचय देल जाय। अपन प्रेमोद्गारसँ हमर चिर पिपासित उतप्त हृदयकेँ आसव वर्षासँ आनन्द सागरमे निमज्जित कएल जाय।
(कलुआ चुप छथि विद्योत्तमा पुन: बजैत छथि)
आब चुप नहि रहल जाय स्वामी। हमर हृदय केर धड़कन व्याकुल भऽ रहल अछि। आउ हमरा संग बैसि हमरा पूर्णता प्रदान कयल जाउ। हमर सौभाग्य जे कण्व गुरुकुलक सर्वश्रेष्ठ स्नातकसँ शास्त्रार्थमे पराजित भेलहुँ आ अहाँ सन तेजपुंज हमर पतिदेव भेलाह। हम सरिपहुँ गर्वित छी जे अपने सन श्रेष्ठ विद्वान् केर अर्द्धांगिनी भेलहुँ। आउ स्वामी !

(विद्योत्तमा अपन हाथ बढ़ा कलुआकेँ अपना लऽग बैसा लैत छथि। कलुआ सकुचाइत छथि। तखने बाहर ऊँटक बलबलएबाक स्वर अबैत अछि। विद्योत्तमा ओहि स्वर दिशि ध्यान दैत पुछैत छथि— किम् वदति?)

कलुआ : **(निम्न स्वरमे)** ऊँट बलबलाइ हय। नागा बबाजी सभ अनने हय ऊँट। **(विद्योत्तमा चौंकैत छथि। किछु क्षण बाद विद्योत्तमा पुनः बजैत छथि)**

विद्योत्तमा : आइ हमरा अहाँक मधुर मिलनक राति अछि। अहाँक मौनव्रत से समाप्त भऽ गेल अछि। आब अपन मुखारविन्दकेँ किछु कष्ट देल जाय स्वामी!

कलुआ : अरविन्दा बड़ शैतान हय। ओकरा कष्ट हेतै तऽ ओ बड्ड मारि मारत हमरा। हमर मायो के मारत ओ। ओकरा कोनो कष्ट नै होबए देबै हम। बरु अपने सब कष्ट सहि जेबै।

विद्योत्तमा : ई की बाजि रहल छी स्वामी?

कलुआ : सत्ते कहैत छी। हमर गामक मालिक हइ अरविन्दा। हमे आर ओकरे रैयत परजा! कोनो दया-धर्म नहि छै ओकरा! ककरो छौंकीसँ छरपिटा दैत हइ।

विद्योत्तमा : अहाँ एना किए बजै छी? आब ओ अहाँक चरण पखारत। अहाँक सेवा करत। आब अहाँक ओ एकटा छोटछीन सेवक बनिकेँ रहत। आब अहाँ एतऽ केर राजा छी। खैर, ई गप्प सब छोड़ल जाय। अहाँ कण्व ऋषिक सर्वश्रेष्ठ शिष्य छी। एहि मातल मधुयामिनीक वर्णन कएल जाय स्वामी। दू आकुल-व्याकुल तन-मनक मधुर मिलन केर चित्र उकेरल जाय। कविता कामिनीक अनावृत कुच आ कंचनजंघाक रसचित्र सभक दिग्दर्शन करा हमर अन्तर्मनकेँ तृप्त कएल जाय हे हमर रसराज! कामदेवक मदन बाण केर संधानक प्रभाव विषयक किछु काव्य कहल जाय कालि महोदय!

कलुआ : मधुयामिनी, कविता कामिनी, मधुर मिलन, कामदेव, मदनबाण! ई सब की होइ हय? हमरा तऽ कुच्छो नहि बुझाय हइ। अपने की बोलै हती? कंचनजंघा पहाड़क चोटी तऽ हमरा गाममे दूरेसँ देखाइत हय। हम एक साधु संगे ओहिपर एक बेर चढ़ल हती।

विद्योत्तमा : **(साश्चर्य)** ओह! सच-सच कहू। अहाँ के छी ?

कलुआ : हम उच्चैठ भगवतीक भक्त हती झूठ नहि बाजै छी। हमर नाम कलुआ हय। बाऊ नहि हय शान्त भऽ गेलै आ माय हमर कुटान-पिशान करै हय। हम कोनो कणव रिखी के नहि जानै छी। गाम से बाहर एक बेर हिमालय आ एक बेर बराह क्षेत्र गेल छी। पढ़बाक लेल हम कतहु गेलो नै छी। हम मूरुख हती।

विद्योत्तमा : **(अचम्भित)** ई की मद्यप जकाँ बजै छी? भोजन बाद प्रियंवदासँ माँगि भाँग पीबि लेलहुँ वा मद्यपान कयलहुँ जे एहन अवाच्य कथा सब बाजि रहल छी?

कलुआ : ने हम भाँग पीने हती आ ने कोनो मदपान केने हती। सत्य यैह हइ।

विद्योत्तमा : **(तमसायल उच्च स्वर)** तखन एतऽ कोना आबि गेलहुँ?

कलुआ : **(भावुक स्वर)** माय कहने रहय जारनि आनय से हम गेल रही वनकट्टा जारनि आनै लेल। तखने ने भात रान्हल जयतै। हम जाहि डारिपर बैसल रही ओकरे काटैत रही। किछु पंडीजी सब ई देखि हमरा कहलनि जे जेना कहब से करब तऽ राजकुमारीसँ बियाह करा देबौ। हम गछि लेलियै आ आबि गेलहुँ। सभामे हमरा मुहसँ किछु बहरा गेल छल ओहिपर पंडीजी शलोक बना सुना देलक। हमरा किछु नहि अबैत हय। **(कानऽ लगैत अछि)**

विद्योत्तमा : **(तामसे थरथर कँपैत)** छल! महाछल!! हे माता ई की भेल! **(कलुआसँ)** रे दुष्ट स्वार्थी नीच! अधम! महापापी! तोँ मात्र जाहिल गँवारे नहि छेँ तू तऽ धूर्त्त शिरोमणि सेहो छेँ। रे ठकहारा

तौँ हमरा कतहुँकेँ नहि रहऽ देलें। कहाँ हम अपनासँ श्रेष्ठ विद्वान् सँ विवाहक संकल्प कएने छलहुँ आ कहाँ तोरा सन मूर्ख गमार हमर भाग्यमे बथा गेल। रे निर्लज्जा! तोरा एको रत्ती लाज नहि भेलौ जे एक दिन जखन रहस्य अनावृत हेएत तखन की होएत?

कलुआ : हम...

विद्योत्तमा : तौँ चुप रह रे पापी! पंडित सब कहलक बियाह होयत आ बिनु पात्र अपात्रक विषयमे सोचने चलि अयलाह मूर्खराज! नारी देह लेल रकटल कापुरुष!

कलुआ : हम कापुरुष नै!

विद्योत्तमा : चुप रह रे मूर्खराज! नारीकेँ मात्र मनोरंजन केर साधन माननिहारकेँ कापुरुषे कहब उचित। अपने केहनो अयोग्य आ कुरूप हो कनिञा मुदा चाही इन्द्रक परी। अपने छथि मूर्ख आ धरफरायल विवाह करऽ अयलाह विदुषी राजकुमारीसँ। पात्र-अपात्रक कोनो विचार नहि कयनिहार कापुरुषे भऽ सकैछ। धिक्कार छौ तोहर पुरुषत्व के रे क्लीव ठकहारा!

कलुआ : (ठाढ़ होइत) हमर पुरुखार्थकेँ गारि नै दे...

विद्योत्तमा : बड़ अयलाह पुरुषार्थ वला! अरे छलसँ विवाह करबामे कोन पुरुषार्थ! पुरुषार्थ छै जय करबामे, स्वयंवरक हमर शर्त्त पूरा कऽ हमरा पराजित कयलाक बाद हमरासँ बियाह करबामे पुरुषार्थ होइतए! छिया छिया! तौँ तऽ छल कयलैँ। तोरामे कोन पुरुषार्थ? तौँ तऽ क्लीव नपुंसक! धिक्कार तोहर पुरुषार्थपर!

कलुआ : **(तामसे थर-थर कँपैत)** बस बस बस! शान्त! शान्त!! धिक्कार छौ तोहर रूपपर! थू-थू तोहर मतिपर जे अपन पतिक अनादर कयलैँ। (दुनू हाथ उठबैत) ई धरती सुनय, ई आकाश सुनय,

तीनू लोक सुनय! एहि रातिक तेसर पहर सुनय! ई चान-तरेगन सुनय! तौँ सेहो सुन गे घमंडी माउगि! आइ हम उच्चैठ भगवतीक सप्पत खाइ छी जे एक दिन तोहर सब गुमान झाड़बौ। जाबत एहि जोग नै हेबौ, तोरा अपन मुह नै देखेबौ। जहिया तोहर ग्यानक घमंड चूरबौ ओहि दिन बेज्जति करैत तोरा छोड़ि देबौ। कथामे सुनने रहिऐ जे बालमिकी मूरुख-चपाट ब्याधा-हत्यारा छलै। फेर एक दिन ओ रामायण कोना लिखलकै? पुरुखक भाग्य केर कोन ठेकान? काल्हि पंडीजी सब तोरा ठकि लेलकौ मुदा आइ हम सप्पत खाइ छी जे सच्ची-मुच्चीमे तोहर सब गौरव झाड़बौ। तोहर सब घमंड चूरबौ आ जखन तोरा हरा देबौ तखन तोहर तेहन बेज्जति करबौ जे सौंसे गौंआ देखतौ। ओहि दिन तौँ हमर पुरुखार्थ देखिहें। जय हे माता भगवती!

(कलुआ जयनाद करैत जोरसँ पयर पटकि प्रस्थान करैत अछि। किंकर्तव्यविमूढ़ विद्योत्तमा माथ पकड़ि विलाप करैत छथि)

विद्योत्तमा : ओह! ई की क्षणमे छनाक भेल हमरा संग! ओह! व्यर्थ एहन तिरस्कार कयलहुँ जे सप्पत खा पड़ा गेलाह। जेहन छथि मुदा हमर स्वामी तऽ आब वैह छथि। ओह! आब की करी? (किछु क्षण विलमि)... नहि नहि! ई आचार्य सभक अन्याय छल नारी जातिक प्रति। एकर प्रतिकार करब सर्वथा उचित। हम एहि योग्य छी जे विद्यादान करैत अपन जीवन चला सकी। हमर क्रोध उचित छल। पतिक तिरस्कार अनुचित छल की? पता नहि लोक की सोचत? ओह! एहि उचित-अनुचितक द्वन्द्वमे ओझरा गेल छी हम। की करी की नहि करी किछु फुरा नहि रहल अछि। हाय रे हमर भाग्य! कौआ सब कुचरि रहल अछि, इजोरिया पसरि रहल अछि। लागै छै जेना भोर भऽ रहल छैक, किछु कालमे सूर्योदय हेतैक मुदा हमर भाग्यक तऽ जेना आइ सूर्यास्त भऽ गेल हो। आह!...

(विद्योत्तमा निराश होइत बिछानपर मुड़ी पटकि बिछानपर

राखल मसनदमे अपन मुह नुका लैत छथि। किछु काल धरि पूर्ण शान्ति रहैत अछि। पुनः..
प्रियंवदा प्रवेश करैत झूमि-झूमि गीत गबैत छथि—

बीतल राति इजोरिया उगल लुबधुब चमकय चान रे!
कौआ कुचरय पवन सिहकाबै मौसम बड़ बेइमान रे!
छल पुरुष प्रकृति मिलन केर राति
सोलह शृंगार यौवन मदन केर राति
केलिलीने रही पता नै चलल कोना भऽ गेलै बिहान रे।
कौआ कुचरय पवन सिहकाबै मौसम बड़ बेइमान रे।
कम्पित अधर गर्म तेज साँसक सफर
मधुयामिनी सपनाक साकार सब स्वर
अरमानक सेजपर ताराक मोती नभमे प्राती गान रे।
कौआ कुचरय पवन सिहकाबै मौसम बड़ बेइमान रे!!

प्रियंवदा उल्लासपूर्वक गीत गबैत छथि आ विद्योत्तमा बिछानपर गुमसुम पड़लि छथि। गीतपर हुनक कोनो प्रतिक्रिया नहि। प्रियंवदाक नजरि विद्योत्तमापर पड़ैत अछि)

प्रियंवदा : एहन मनोयोगसँ अहाँक मधुयामिनीक भोरक वर्णन कयलहुँ मुदा अहाँक कोनो प्रतिक्रिया नहि! वाह! एहन मगन! देखू तऽ कोना मन्द-मन्द समीर अंग-अंगमे सुरसुरी उत्पन्न कऽ रहल अछि, शीतल पवन शरीर सिहका रहल अछि, पक्षी सभक कलरव आ प्राती केर स्वर वातावरणकेँ अद्भुत कऽ देने अछि। आम्रमंजरीक मादक महक मदनरससँ सबके मस्त कऽ रहल अछि। ओहिपर कोइलीक कूक! ओह!! भगवान् भास्कर कखनसँ हुलकी दऽ रहल छथि आ हमर दुलरी सखी अखन तक सोहाग रातिक खोमारीएमे छथि।
(विद्योत्तमाक लऽग जाइत) चलू नखक्षत देखाउ, मधुचुम्बन चिह्न देखाउ, रातुक केलिकथा सुनाउ। आइ हम किन्नहु नहि मानब, सब सुनिकेँ रहब। **(स्वतः)** अँय! **(विद्योत्तमाकेँ उठबैत)**

अहाँ एहन उदास आ चुप किएक छी ? की रातिए भरिमे स्वामी सब रस चूसि सिट्ठी बना देलनि? महर्षि कण्व केर सर्वश्रेष्ठ छात्र आ हमर सखीक प्राणनाथ कतऽ छथि?
(हठात् विद्योत्तमा प्रियंवदाक छातीमे मुह नुका हबो ढकार कानऽ लगैत छथि।)

प्रियंवदा : **(आश्चर्यचकित)** ई की भेल!

विद्योत्तमा : **(कनैत)** छल! महाछल!! प्रियंवदा! आचार्य शास्त्रार्थमे अपन आ शिष्य सभक पराजयपर प्रतिशोध लैत अनर्थ कयलनि हमरा संग। कोनो गमारसँ विवाह करा अपन ओइलि सधा लेलनि। ओ महर्षि कण्व गुरुकुल केर छात्र नहि निपट मूर्ख गमार छथि।

प्रियंवदा : **(आश्चर्यचकित)** ई की कहैत छी सखी?

विद्योत्तमा : सर्वथा सत्य कहैत छी। अहाँसँ अपन हृदयक बात नहि कहब तऽ किनका कहि सकब सखी? सोहाग सेजपर मौनव्रत समाप्तिक बातपर ओ गों गैं करऽ लागल। संस्कृत तऽ नहिए अबै छै ओ तऽ नीकसँ मैथिलीयो नहि बाजि सकैत छथि, अपभ्रंशो नहि। हुनक भाषा विचित्र अछि ओ मात्र जाहिल गमार जकाँ बाजि सकैत छथि। हम धिक्कारलहुँ तऽ नेना जकाँ कानि-कानि आचार्यक छल केर पूर्ण कथा कहलनि जे हम तऽ तेहने मूर्ख छलहुँ जे जाहि डारिपर बैसल रही ओकरे काटैत रही। गुरुजन सभकेँ कोनो मूर्खक खोज छल आ ओ सब हमरा सिखा-पढ़ा ई सब करा देलनि। राजाकेँ आशीर्वाद स्वरूप हमरा मात्र ॐ नमः शिवाय कहबाक छल मुदा ठीक समयपर ओ बिसरा गेल आ कहुना मुहसँ उशंरटं शब्द बहरा गेल छल। पण्डित अपनेसँ श्लोक बना सुना देलनि। मिथ्या जयजयकार भेल। ओह! पराजयक प्रतिशोधमे लोक एहन आन्हर कोना भऽ जाइत छैक प्रियंवदा?

प्रियंवदा : प्रतिशोधक ज्वारमे मतिहरण भऽ जाइत छैक सखी! मतिहरण होइते लोक उचित-अनुचित सब बिसरि जाइत अछि। ओ अपन

स्वार्थमे कोनो अनर्थ कऽ सकैत अछि। अच्छा, छोड़ू ई बात! अहाँ हमर गप्प ध्यानसँ सुनू। गौरीक विवाहमे की भेल छल? माता पार्वतीक विवाहक समय वर महादेवक विचित्र भेषभूषा, भाव-भंगिमा आ अंग-भंग नंग-धड़ंग बरियाती देखि परिछन काल माता मेना विषादसँ कानि गेल छलीह, संतापसँ भरि गेल छलीह। फेर की भेल? सब मंगल भेल। अहूँ मोनसँ गिरिजा स्थानमे पूजा कएने छी। गिरिजा भगवती अहाँ संग अन्याय किन्हु नहि होमऽ दऽ सकैत छथि। अहाँ धीरज राखू, सब नीक होयत। अहाँ व्यर्थ चिन्ता जुनि करू। गिरिजा भगवती सब मंगल करतीह। मुदा ओ छथि कतय ?

विद्योत्तमा : पता नहि। भुरुकबा उगैसँ पहिने कतऽ निपत्ता भऽ गेलाह से नहि जानि। हम कदाचित् हुनके संग निर्वाह कऽ लितहुँ, भगवतीक यैह इच्छा मानि सब स्वीकार कऽ लितहुँ। कहुना जीबि लितहुँ। मुदा आब नहि! परित्यक्ता भऽ हम किन्हु जीबि नहि सकब। अहाँ चारि टा घैलक व्यवस्था करू हम गर्दनिमे बान्हि नदीमे डूबि अपन प्राण त्याग करब।

प्रियंवदा : **(विद्योत्तमाक मुहपर हाथ रखैत)** मरथि अहाँक दुश्मन। प्राणत्याग करथि पापी आचार्य जे अहाँ संग एतेक पैघ छल कयलनि। अहाँक कोन अपराध? अहाँ तऽ माता सीता आ ज्ञान गर्विता गार्गीक अनुसरणमे अपन निश्चय कयलहुँ जे अपनासँ श्रेष्ठ विद्वान् सँ विवाह करब। ई कोनो पाप नहि अछि। की माता सीता आ विदुषी गार्गीक अनुसरण करब अनुचित अछि ? किन्हु नहि। अहाँ अपने विदुषी छी। हम साधारण नारी अहाँकेँ की समझा सकब? मुदा ई अवश्य कहब जे आत्महत्या महापाप थिक। आत्महत्या कोनो समस्याक समाधान नहि भऽ सकैत अछि। संकट केर सामना साहससँ करबाक चाही नहि की डरिकेँ पलायन। जखन किछु अपना हाथमे नहि हो तखन सब किछु भगवती आ भगवान् पर छोड़ि देबाक चाही।

विद्योत्तमा : हमरा तऽ एहि कोबरघरसँ बहरएबाक साहसे नहि होइत अछि।

पिताश्री कतेक प्रसन्न छलाह, माताश्री आ परिजन सभक खुशीक पारावार नहि छल। हम किनको सोझाँ कोना जाउ? की करी, की कही, किछु समझिमे नहि आबि रहल अछि। जे सब सपना देखने रही ओ इन्द्रधनुषी सपनाक सातू रंग बदरंग भऽ गेल। शास्त्रार्थमे पराजित कयनिहारेसँ विवाह करब, ई निर्णय तऽ हमरे छल तेँ किछु बाजि नहि सकैत छी। आब की कही,किनका कही? किछु सूझि नहि रहल अछि प्रियंवदे!

प्रियंवदा : दुख आ सुखमे यैह मौलिक अन्तर अछि सखि! दुख दोसरकेँ कहलासँ घटैत अछि आ सुख वा खुशी आन किनको कहला वा बाँटलासँ बढ़ि जाइत अछि। आइ कहू वा काल्हि कहऽ तऽ सभकेँ पड़बे करत। अहाँ निधोक चलू, हम छी ने, सब सम्हारि लेब!

(विद्योत्तमा प्रियंवदाक छातीमे मुह नुका लैत छथि।
दुनूक प्रस्थान, यवनिका पात)

दृश्य- चारि

(ऋषि कण्वक आश्रम। यज्ञक हवनकुण्ड मिझा गेल अछि मुदा एहिसँ अल्प धूम्रप्रवाह जारी अछि जाहि कारणेँ वातावरणमे सरड़ आ गुग्गुल केर दिव्य सुगन्ध पसरि गेल अछि। कालिदास आ कुमारदास वार्त्तालाप करैत छथि)

कुमारदास : मित्र कालिदास! अहाँक कथा सुनि हम भावुक भऽ गेल छी। विदुषी विद्योत्तमाक प्रण, आचार्य आ विद्वान् सभक पराजय आ प्रतिशोध, संकेतमे शास्त्रार्थ, विवाह, पत्नीक तिरस्कारसँ व्यथित कोहबर घरमे पत्नीक परित्याग, उच्चैठ गुरुकुलमे रसोइयाक चाकरी, वर्षा ऋतु केर विकराल रातिमे उफनैत नदी हेलिकेँ पार कऽ भगवतीकेँ दीप बारि पूजन आ निशानी देबाक लेल भगवतीक मुहपर दीप केर करिखा लगबैत काल भगवती द्वारा साक्षात् दर्शन दऽ हाथ पकड़ि विश्व-विश्रुत होयबाक आशीर्वाद...

कालिदास : सब माता उच्चैठ भगवतीक कृपा! स्वयंवरमे आचार्य हमर परिचय ऋषि कण्वक शिष्ये रूपमे देने छलाह। तैँ हम अपन मातृभूमि मिथिलासँ एतेक दूर एतऽ आबि कण्व ऋषिक एहि आश्रममे अपन भविष्य देखलहुँ। हिमालय केर पूर्वी तराइ क्षेत्र मिथिलासँ हिमालय केर पश्चिमी तराइ गढ़वालमे मालिनी नदीक तटपर अवस्थित कोटद्वारक एहि आश्रम तक केर यात्रा अत्यन्त दुर्गम छल। तथापि विद्योत्तमाक तिरस्कारक शब्द आ भगवतीक आशीर्वाद हमर पाथेय बनल। एहि चौकीघाटाक लऽग किनकसोत कुञ्जकेँ

कोना बिसरि सकैत छी मित्र! आइ वर्षक वर्ष व्यतीत भऽ गेल तथापि एको क्षणक लेल हम ने अपन मातृभूमि मिथिला आ ने उच्चैठ भगवतीकेँ बिसरलहुँ। एतेक वर्ष बाद एतऽ रहि आब हम एहि योग्य अवश्य भऽ गेल छी जे विद्योत्तमाक ज्ञान गर्व कखनो खंडित कऽ सकैत छी मुदा आब ओम्हर ध्याने नहि जाइत अछि। तिरस्कारसँ भरल शब्दबाण सदिखन जेना हमर मर्मस्थलकेँ बेधैत रहैत हो। ओकर डोका सन-सन पैघ-पैघ आँखि जेना हमरा व्याकुल करैत हो। विद्योत्तमाक तिरस्कारक एक-एक शब्द ओहिना मोन अछि कापुरुष, महापापी, धूर्तशिरोमणि, ठकहारा, क्लीव, नपुंसक... ओह!

कुमारदास : मित्र! अहाँ मानी वा नहि मानी मुदा अहाँक आजुक स्थितिक निर्माणमे ओहि शब्द सभक योगदान अवश्य अछि। सत्य यैह अछि जे अहाँक अचेतन मन अखनो देवी विद्योत्तमाक परिक्रमा करैत अछि। मेघदूतम् मे यक्ष नहि अहाँ स्वयं अपन विरह व्यथा कहैत छी। मेघकेँ दूत बना अहाँ अपन प्रिया विद्योत्तमेकेँ सन्देश पठओने छी। अहाँक सृजन संसार अद्‌भुत अछि। न भूतो न भविष्यति कही तऽ कोनो अत्युक्ति नहि। विलक्षण उपमा, अद्‌भुत गुण, अपूर्व अर्थ गौरव, सर्वश्रेष्ठ शृंगार, अद्वितीय बिम्ब विधान, अनुपम शब्द चित्र, भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभाक प्रकर्ष...

कालिदास : **(बात कटैत)** ई अहाँक स्नेह अछि।

कुमारदास : नहि। ई सत्य अछि। अहाँक रचनाक प्रसंगे कतबो कही ओ अल्पे होयत। एहि गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ स्नातक रहल छी अहाँ। वर्तमान आश्रमपति महर्षि कण्व अहाँकेँ अपन गौरव मानैत छथि। अभिज्ञान शाकुन्तलम् मे अपन दादागुरुक अभिनव शब्द चित्र देखि हुनको चकबिदोर लागि गेल छल। ओहि दिन संबंधित प्रसंग सुनलाक बाद भरि पाँजमे अहाँके पकड़ि दहो-बहो नोरसँ अहाँक मस्तककेँ आर्द्र करैत हुनकर भावुक भेल स्वर- सर्वतो

जयतु इच्छेति पुत्रात् शिष्यात् पराजयम् अपूर्व छल। एहि अत्यन्त विरल दृश्यक साक्षी रहल छी हम! एहन अपूर्व महा सौभाग्य मात्र अहाँकेँ भेटल अछि जे गुरुवर अहाँसँ अपन पराजय केर कामना कयलनि।

कालिदास : आह! गुरुवर...

कुमारदास : आइ हमरा बाजऽ दियऽ। सम्पूर्ण भारतवर्षमे अहाँक मेधाक सूर्य दमकि रहल अछि। राजसूय, अश्वमेध यज्ञादि संपन्न करएबाक अनुरोध विभिन्न राज्य सभसँ अबैत रहैत अछि। महाराज विक्रमादित्यक दरबारमे रत्न बनबाक आमंत्रण पत्र लऽ हुनकर दूत गुरुकुल केर अतिथिशालामे कहियासँ बैसल छथि। अहाँ छी जे दिवारात्रि अध्ययन, लेखन आ भ्रमणमे मस्त रहैत छी।

कालिदास : भ्रमण केर आनन्द अपूर्व अछि। अध्ययन हमर रूचि आ लेखन आब हमर जीवनाधार...

कुमारदास : **(हठात्)** जीवनाधार संग अपन जीवन केर विषयमे, अपन भविष्यक विषयमे सेहो सोचबाक चाही। हमरा सभक अध्ययन आब समाप्त भऽ गेल अछि। अहाँ बहुत विलम्बसँ अध्ययन शुरू कयने छलहुँ मुदा समाप्त सभसँ पहिने कयलहुँ ई गौरवक विषय अछि। हम तऽ सिंहल केर राजकुमार छी। पिताश्री मोग्गलान हमरा श्रीलंकाक युवराज घोषित करबाक दिन निर्धारित कऽ देने छथि तेँ हम आब गुरुकुलसँ विदा भऽ जाएब। मित्र कालिदास! आजुक दिन अहाँसँ किछु याचना करऽ चाहैत छी, करी ? देब ने ?

कालिदास : **(कुमारदासक हाथ पकड़ैत)** याचना नहि मित्र। आदेश देल जाय।

कुमारदास : नहि, पहिने वचन देल जाय।

कालिदास : अहाँ कहि के तऽ देखू। हम निराश नहि करब।

कुमारदास : नहि। बिनु वचन नेने हम नहि कहब। (हाथ जोड़ैत) अहाँ उम्र आ योग्यता दुनूमे हमरासँ श्रेष्ठ छी। आइ अपन एहि अनुजकेँ वचन देल जाय।

कालिदास : **(साश्चर्य)** अँय! अहाँ हमरा अपन अग्रज मानलहुँ? हे भगवती! याचित वस्तु देबामे सक्षम रहलापर हम निराश नहि करब, से वचन दैत छी। अहाँसँ हम कहियो कोनो कथा नहि नुकायल। गुरुकुलमे प्रथम दिवससँ अहाँ हर क्षण हमर संग देलहुँ। मोन होयत जे किछु सहपाठी हमर अधिक उम्र आ विपन्नावस्थापर हमर उपहास करैत छलाह तखन अहाँ ढाल बनि हमर रक्षा करैत छलहुँ। हमर रोम-रोम अहाँक कृतज्ञ अछि। हमरापर अहाँक बहुत ऋण अछि...

कुमारदास : मित्रपर कोनो ऋण नहि होइत अछि सखा। अहूँ तऽ हमर काव्य 'जानकीहरण' केर शोधन आ परिमार्जन कयने रही। ई ऋण नहि मित्रता केर धर्म छी बन्धु!
(कुमारदास उठाकेँ कालिदासकेँ अपन अंकपाशमे बान्हि लैत छथि)

कालिदास : **(भावुक होइत)** श्रीलंकाक राजकुमार आ भावी राजा कुमार धातुसेना आइ हमरा अग्रज आ बन्धु कहलनि। जेकरा लेल कहियो दुनू साँझक भोजन निश्चित नहि छल ओहि अकिंचनकेँ राजकुमार अपन हृदयसँ सटा लेलनि। हमरासँ किछु मँगलनि। हाय रे हमर भाग्य! जन्म-जन्मसँ याचक हम आइ दाता भऽ गेलहुँ। माता उच्चैठ भगवती! सब अहाँक कृपा! (दुनू हाथ ऊपर उठबैत) जे इच्छा हो से माँगल जाय। हम वचन दैत छी जे हम पूर करब। आइ जँ हमर प्राण वा हमर जीवनो माँगि लेब तऽ हँसैत दऽ देब। आश्रम केर एहि हवनकुण्डक अग्निक समक्ष ई वचन दैत छी हम।

कुमारदास : अहाँक जीवनक लेल तऽ हम अपन प्राणोत्सर्ग कऽ सकैत छी मित्र। अहाँक प्राण नहि चाही हमरा, मात्र तीन वचन चाही।

कालिदास : **(आश्चर्यचकित)** तीन वचन ? हमरासँ...

कुमारदास : हँ! मात्र तीन वचन मित्र! प्रथम वचन जे अहाँ भौजी विद्योत्तमाकेँ क्षमा कऽ देब आ सम्मान सहित अपन संग राखब। स्वयंवरमे अहाँक महर्षि कण्व गुरुकुल केर सर्वश्रेष्ठ छात्र रूपमे जे परिचय देल गेल छल से भगवतीक कृपासँ फलित भऽ गेल अछि। मित्र! अहाँ मानी वा नहि मानी मुदा सत्य यैह अछि जे अहाँक एहि उपलब्धिमे भौजीक तिरस्कार आ धिक्कारक योगदान अवश्य अछि। दोसर वचन दियऽ जे महाराज विक्रमादित्यक आमंत्रण केर स्वस्ति आइ पठा देब। तेसर आ अंतिम वचन जे अहाँ एक बेर हमर मातृभूमि श्रीलंकाक महाथोटा माटरा हमरासँ भेंट करऽ अवश्य आयब। हम अपन देशक राजा रावण केर विद्वत्ता, वीरता, धीरता, संपन्नता आ आदर्श एवं मर्यादाक प्रति हुनक दृढ़तासँ अहाँक साक्षात्कार कराबय चाहैत छी।

कालिदास : अवश्य...

कुमारदास : अखन हमरा बाजए दियऽ। एहि यज्ञवेदीक समक्ष हम अहाँके ई वचन दैत छी जे अपन देशक भ्रमण करओलाक बाद अहाँक आपसीमे हम अहाँक संग विदा भऽ अहाँक मातृभूमि मिथिला आयब। अहाँ हमरा राजर्षि जनक केर नगरी जनकपुरक दर्शन करायब। हम ओहि माता उच्चैठ भगवतीक दर्शन-पूजन अवश्य करब जिनकर कृपासँ वज्रमूर्ख कलुआ महाकवि कालिदास रूपमे परिणत भेल। हमरा वचन दियऽ मित्र!

(कुमारदासक बढ़ल हाथ कालिदास थामि लैत छथि)

कालिदास : अहाँक तीनू इच्छाक सम्मान करबाक वचन एहि यज्ञवेदी तऽर दैत छी। ओना जाहि राति ओ हमर अज्ञानतापर हमरा अपमानित आ तिरस्कृत कयने छलीह ओहि राति कोबराक त्याग करैत काल मोनेमोन हम प्रतिज्ञा कयने रही जे एहि ज्ञानगर्वितार्कें विद्वत्ताक सब घमंड चूर करब। अपमानित आ तिरस्कृत करैत हिनकर स्थायी परित्याग करब तखने हमरा आत्मतुष्टि होयत। अबैत

काल हम अपन प्रतिज्ञा सुना सेहो देने रही। मुदा अहाँक देल वचनक रक्षा निमित्त आब हुनकर कोनो दर्पदलन हम नहि करब। स्वयं हुनका ओतऽ जा हुनका सम्मान सहित आनब आ सदा संग राखब।

कुमारदास : ओह मित्र!

कालिदास : स्वर्णमयी लंकाधिपति महाबली रावण शिव ताण्डव स्तोत्र आ रावण संहिताक रचयिता छलाह। भगवान् सूर्यक सारथी अरुणसँ ओ जन्मकुण्डली, हस्तरेखा आ सामुद्रिक विद्या प्राप्त कयने छलाह जे अरुण संहितामे संकलित अछि। ऋग्वेदपर हिनक भाष्य आ रावणीयम् अनादि कालसँ विद्वत् वर्गमे समादृत अछि।

कुमारदास : महाबली रावण आयुर्वेदक महान् ज्ञाता सेहो छलाह। महारानी मन्दोदरीक प्रश्न सभपर आधारित हिनक शिशुचिकित्सा विषयक प्रतिष्ठित पोथी 'अर्क प्रकाश'मे गर्भस्थ शिशुक रक्षा आ जन्म केर बाद चिकित्साक नीक वर्णन अछि। मातृका सभक पूजासँ परिवारकेँ कोना प्रसन्न राखल जा सकैछ आ छोटी माता एवं बड़ी माता अर्थात् चेचक महामारीक लक्षण आ उपायपर 'कुमारतंत्र' अद्भुत रचना अछि। आयुर्वेदमे 'नाड़ी परीक्षा' नामक हिनक ग्रंथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। इन्द्रजाल, जादू-टोना आ तंत्र केर विलक्षण साधक दशानन 'इन्द्रजाल', 'प्राकृत कामधेनु', 'प्राकृत लंकेश्वर' प्रभृति पुस्तक सभक रचनाकार छलाह। हिनक पाण्डित्य अपूर्व छल। बहिनक अपमान केर प्रतिशोधमे जानकीहरण कयलनि मुदा कखनो आदर्शसँ विचलित नहि भेलाह।

कालिदास : हँ मित्र! सीता हरणक बाद अशोक वाटिकामे माता सीताकेँ सुरक्षित रखलनि, शीलभंग केर प्रयास नहि कयलनि। ई मर्यादा आ आदर्शक बात तऽ अवस्से थिक।

कुमारदास : अहाँ समक्ष एक रहस्य अनावृत करैत छी मित्र! जेना भगवान् राम सम्पूर्ण भारतवर्षमे पूजित छथि तेना महाबली दशानन हमर

सम्पूर्ण देशमे पूजित नहि छथि। ओ किछु भागमे पूजित छथि। ई सत्य अछि। मुदा इहो सत्य अछि जे श्रीलंकाक महानायक रूपमे ओ सम्पूर्ण देशमे प्रतिष्ठित अवश्य छथि। हुनका संग महाबली कुम्भकर्ण आ मेघनादकेँ हमरा ओतऽ असीम प्रतिष्ठा प्राप्त अछि। भ्रातृ धर्म, पुत्र धर्म आ देश धर्मक प्रतिमान छथि ई दुनू। राम-लक्ष्मण भले जे रहल होथि लंकाक लेल तऽ ओ आक्रमणकारी छलाह आ कुम्भकर्ण मेघनाद अपन कर्तव्य निर्वहन कयलनि। देशक आनपर प्राणोत्सर्ग कयनिहार ई दुनू नरश्रेष्ठ जन-जन केर हृदयमे वास करैत छथि।

कालिदास : वाह!

कुमारदास : हँ! हमरा ओतऽ विभीषणकेँ कोनो प्रतिष्ठा नहि अछि। कोइ हुनका आदरक दृष्टिसँ नहि देखैत अछि।

कालिदास : **(साश्चर्य)** से की मित्र?

कुमारदास : लोक मानैत छथि जे एहि कुलघाती आ देशद्रोही विभीषणक कारणेँ महाबली रावण पराजित भेल छलाह। विद्या, शास्त्र, शक्ति, अस्त्र-शस्त्र, संपन्नता सभमे श्रेष्ठ रहलाक बादो एकमात्र एहि देशद्रोही विभीषण केर कारण महाबलीक पराभव भेल। एहि कारणेँ एहि कुलघातीकेँ हमर देशमे कहियो प्रतिष्ठा नहि भेटि सकल। कोइ अपन नेनाक नाम विभीषण नहि रखैत छथि। धर्मक मिथ्या आलम्बन लऽ देश संग घात करब कथमपि उचित नहि। कारण जे रहल हो मुदा श्रीराम दल तऽ लंकापर आक्रमण कयने छल। देशपर आक्रमण कयनिहारक प्रतिकार करबाक चाही आ एहन संकटक स्थितिमे देशत्याग करब कखनो धर्म नहि भऽ सकैछ।

कालिदास : सर्वथा सत्य मित्र! देशक रक्षा करब सभसँ पैघ धर्म थिक। जे धर्म देशहितपर भारी पड़ि जाय ओहि धर्मक परित्याग करब

सैह उचित धर्म थिक। धर्मभ्रष्ट भेलापर प्रायश्चित केर प्रावधान अछि मुदा देशसँ विश्वासघातक कोनो प्रायश्चित नहि छैक। धर्मच्युत् व्यक्ति उचित प्रायश्चित कऽ पुनः अपन धर्ममे आपस आबि सकैत छथि मुदा राष्ट्रद्रोहक कारणेँ राष्ट्रकेँ भेल क्षत्ति वा पराजय केर भरपाई संभव नहि अछि। अपन मातृभूमिक लेल शीशोत्सर्ग कयनिहारसँ पैघ कोइ नहि। शहीद वा बलिदानी सर्वदा नमस्य स्तुत्य वन्दनीय पूजनीय होइत छथि। हमसभ हुनकर वन्दना करैत गर्वित होइत छी।

कुमारदास : सर्वथा सत्य! सुनैत छी जे हमर पितामह धातुसेना नेनपनेसँ वैराग्य धारण कयने छलाह। जखन देशपर संकट आयल आ दमिल राजा हमर देशकेँ पददलित कयलनि तखन एक दिन धातुसेना देशक लेल धर्मक त्याग कयलनि। ओ धर्म केर निशानी काषाय रंगक अन्तरवासक, उत्तरासंग आ संघाटी एहि तीनू चीवर केर त्याग कयलनि। जपमाला आ भिक्षापात्रक परित्याग करैत ओ हाथमे तरुआरि उठा लेलनि। अपन अतुलित साहस आ शौर्यसँ निज देशकेँ राजा पीठ्य केर चाँगुरसँ स्वतंत्र करओलनि।

कालिदास : हम अहाँक ओहि महान् पितामह धातुसेनाकेँ प्रणाम करैत छी। ओ वस्तुतः धर्मममर्मज्ञ छलाह। मातृभूमिक रक्षा धर्मक रक्षा थिक। धर्म देशसँ पैघ कथमपि नहि भऽ सकैछ। देशसँ पैघ कोनो धर्म नहि। **(दक्षिण दिशामे दुनू हाथ जोड़ैत छथि)** नमन अशेष हे धर्मपालक धातुसेना!

कुमारदास : एहि कारणेँ हुनकर अपर नाम लोक धर्मसेना सेहो कहैत छल। मित्र कालिदास! हमर नाम हुनके नामपर धातुसेना राखल गेल छल।

कालिदास : ओह विलक्षण!

कुमारदास : जखन अहाँ हमर सिंहल देश आयब तऽ हम ओ दीघसन्द विहार देखायब जतऽ ओ अपन माम महानामा संग रहैत

बौद्ध धर्मक मर्म सीखैत छलाह। एहि विहारक निर्माण राजा देवानांपिय तिस्स केर सेनापति दीघसन्दन द्वारा भारतवर्षक सम्राट् अशोकक पुत्र महेन्द्रक विश्राम लेल भेल छल।

कालिदास : अवश्य।

कुमारदास : हम अहाँकेँ महाबली दशानन केर किला देखायब। अशोक वाटिका देखायब। हमरा सभक पारम्परिक राजधानी अनुराधापुर रहल अछि। पित्ती कश्शप विद्रोह कऽ पिताक राज्य अपहृत कयलनि आ सिंहगिरिमे भव्य किला बनओलनि। हमसभ अनुराधापुरसँ भागि भारतवर्ष आ श्रीलंकाक दक्षिणी क्षेत्र रोहुणामे नुकाइत रही। रोहुणा क्षेत्रक महाथोटा माटरा एहि विपत्ति कालमे हमरा सभकेँ गुप्तवासमे आश्रय देने छल। तेँ हम अपन आवास ओतहि राखब। अहाँ माटरे आयब मित्र!

कालिदास : अवश्य मित्र!

कुमारदास : लंकेश संगीतशास्त्रक महान् ज्ञाता से छलाह। परम्परागत संगीत वाद्ययंत्र वीणामे आवश्यक परिमार्जन सभक कारण हुनका एहि रावण वीणा केर आविष्कारक मानल जाइछ। हुनक पुष्पक विमानकेँ सिंहल भाषामे दाण्डु मोनारा अर्थात् मोर यंत्र कहल जाइत छल। महाबली दशानन केर महल नुवारा एलिया क्षेत्रमे छल। नुवारा एलियासँ उदा घाटी जयबाक मार्गमे अखनो असंख्य अशोकक गाछ अछि। एहि क्षेत्रमे ओ अशोक वाटिका छल जतऽ माता सीताकेँ राखल गेल छल। सीता एलिया आ एतऽ केर सीता अम्मा मन्दिर विलक्षण अछि। हम ओ सभ अहाँकेँ देखायब। कोणेश्वरम् मे महर्षि अगस्त्य द्वारा स्थापित रावण केर प्रतिमा अखनो विलक्षण अछि। रैगला गुफामे रावण केर शरीर राखल गेल छल। ई सब स्थल हम अहाँकेँ अवश्य घुमायब।

कालिदास : हम अवश्य ओ जगह सब देखब जतऽ मैथिली दशानन रावण केर कैदमे रहल छलीह। जगत् जननी जानकी मिथिलेश महाराज

जनक केर पुत्री छलीह, सम्पूर्ण मिथिलाक गौरव! हम जन्मसँ मैथिल छी। एहि संबंधसँ ओ हमर आराध्य अग्रजा भेलीह, नमस्य माता भेलीह। हमरा सभक देशमे बहिन वा बेटीक सासुरमे कोनो कष्टक विषयमे जानि नैहरसँ पुछारी होइत छैक। पता नहि माता सीताक कष्ट सुनि नैहर मिथिलासँ पुछारी भेल छल वा नहि मुदा हम ई काज अवश्य करब! हम ओहि जगह सभपर अवश्य जायब। ओहि दर्दकेँ अनुभव करबाक प्रयास करब जे माता सीता भोगने होएतीह। कमसँ कम अपन दू ठोप नोरसँ माता सीताकेँ अपन नैहरक अनुभूति तऽ अवश्य करायब हम! हे जनक दुलारी!! हे मैथिली!! ओह!!

(कालिदास भावुक होइत छथि)

कुमारदास : मित्र! अहाँ भावुक भऽ गेलहुँ। ओह! अहाँक सम्वेदनशीलता अद्भुत अछि। जानकीक चर्चपर अहाँकेँ एना भावुक होइत देखि हम आश्वस्त छी जे अहाँ हमर देश अवश्य आयब। आ देखल जाय जे अहाँ आब वचनबद्ध सेहो छी जे एक बेर हमर मातृभूमि अवश्य आयब। हम एक बेर फेरसँ ई वचन दोहराबैत छी जे आपसीमे अहाँक संग हम मिथिलाक यात्रा अवश्य करब।

कालिदास : हम अहाँक मातृभूमि अवश्य आयब मित्र! अहूँ हमरा वचन देलहुँ जे आपसीमे अहाँ हमरा संग हमर मातृभूमि मिथिला आयब, ई हमरा लेल अत्यन्त गौरव केर बात अछि। हम अहाँके जनकपुरीक दर्शन अवश्य करायब। फेर हम अहाँकेँ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करायब जिनकर कृपासँ एहि अकिंचनकेँ विद्यादान भेटल छल। एहिसँ सटले हमर गाम अछि। मायकेँ बिलटलाक बाद गामपर आब कोइ नहि अछि। हम जाहि गुरुकुलमे रसोइया रही ओ थुम्हानी नदीक दोसर किनारपर अछि। एक कात माता उच्चैठ भगवतीक मन्दिर आ दोसर कात गुरुकुल। गुरुकुल वला डीह आब हमरे नामसँ जानल जाइत अछि। हम अहाँक इच्छानुसार ओतहि विद्योत्तमाक संग रहब।

कुमारदास : फेर हमर दोसर वचन केर की होयत जे अहाँकेँ आइ विक्रमादित्यक राजसभाक रत्न बनबाक प्रस्ताव स्वीकार करबाक अछि?

कालिदास : अहाँक देल कोनो वचन वृथा नहि होयत मित्र। हम महाराज विक्रमादित्यक प्रस्ताव आइ स्वीकार करैत अपन स्वस्ति पठा देब। हमर कर्मक्षेत्र उज्जैन अवश्य होयत मुदा हम मातृभूमि मिथिलाकेँ कहियो बिसरि नहि सकब। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी! ओहि पावन उच्चैठ गुरुकुल डीहपर अपन गृह निर्माण अवश्य करायब आ अवकाश कालमे देवी विद्योत्तमाक संग एतहि आबि रहब आ विद्यादान करब।

कुमारदास : विद्योत्तमा सन विदुषी आ अहाँ सन विद्वान् जतऽ शिक्षण कार्य करत ओ गुरुकुल विश्व-विश्रुत अवश्य होयत। हमरो परिवार आ देशसँ बटुक सभ एहि गुरुकुलमे आबि शिक्षा ग्रहण करताह। हम सेहो आयब। ओह! की अनुपम दृश्य होयत!

कालिदास : अहाँ जखन एतऽ आयब तखन विद्योत्तमा ई जानि अहाँक आर विशेष मानदान करतीह जे अहाँक कारणेँ हमरा सभक पुनर्मिलन भेल। सब उच्चैठ भगवतीक कृपा। माता उच्चैठ भगवती अहाँक मंगल करथि मित्र!

**(दुनू एक दोसराकेँ हाथ जोड़ैत विदा करैत छथि।
यवनिका पात)**

दृश्य- पाँच

(अपन कक्षमे विद्योत्तमा साधारण वस्त्रमे बिनु कोनो श्रृंगार वा आभूषणकेँ बैसलि कोनो ग्रंथ पढ़ि रहल छथि। भोरक समय अछि। नेपथ्यसँ द्वार खटखटएबाक स्वर अबैत अछि- ठक! ठक!! ठक!!! विद्योत्तमा चौंकैत एम्हर-ओम्हर ताकि किछु नहि देखि फेर ग्रंथमे डूबि जाइत छथि।)

विद्योत्तमा : **(स्वगत)** आइ भोरेसँ कौआ अखन धरि कुचरि रहल अछि। हमर वाम अंग आ आँखि फड़कि रहल अछि। एहि नीरस जीवनमे ई शुभ संकेत किएक?
(किछु काल बाद फैर वैह स्वर अभरैत अछि- ठक! ठक!! ठक!!! एहि बेर विद्योत्तमा आसनसँ उठि जाइत छथि। द्वार खटखटएबाक फेर स्वर अबैत अछि आ एहि संग कालिदासक स्वर सेहो अबैत अछि - देवि! द्वार देहि। ई स्वर सुनि विद्योत्तमा चौंकैत छथि)

विद्योत्तमा : आह! ई केहन स्वर! ई किछु देखल सुनल जकाँ लगैत अछि। किनकर भऽ सकैत अछि?
(वैह स्वर फेर अबैत अछि— देवि! द्वार देहि! विद्योत्तमा ओहि स्वरकेँ अपन बाम कानपर हाथ राखि अकानैत छथि)

विद्योत्तमा : **(स्वगत)** ई तऽ हमर स्वामीक शब्द लगैत अछि। मुदा एहन विलक्षण संस्कृतमे ओ कोना बाजि सकैत छथि? अवश्य भ्रम भऽ रहल अछि हमरा। कहाँ ओ मूर्ख चपाट आ कहाँ ई परिष्कृत

उच्चारण! हे जगदम्बा! जाहि दिनक एतेक वर्षसँ प्रतीक्षा कयलहुँ कहुना एकरा सत्य करू माता! हमरा पतिक तिरस्कारक दण्ड भेटि गेल अछि माता! चिर विरहिन आ परित्यक्ता बनि लांछित जीवन जीयब कतेक दुष्कर अछि, हम ई जानि गेल छी। एक-एक पल, एक-एक दिन, एक-एक मास आ एक-एक वर्ष हम कोना अहुरिया काटलहुँ से हमही जनैत छी। ओहि राति हम जे पतिक तिरस्कार कयलहुँ तेकर भारी दण्ड हम भोगि चुकल छी। हे जगदम्बा! हमर भ्रमकेँ सत्य बनाउ। हम जीवन भरि अहाँक पूजा करब। जे पाप कोबरघरमे हुनका धिक्कारैत आ अपशब्द कहैत हम कएने रही ओकर प्रायश्चित करब माता!
(एकदम लऽगसँ वैह स्वर फेर अबैत अछि— देवि! द्वार देहि!)

विद्योत्तमा : ओह! वैह चिर प्रतीक्षित स्वर अछि। आइ ई की विशेष बात अछि— ओह! *अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः!*
(सजल-धजल राजकीय परिधानमे कालिदास मंचपर अबैत छथि। विद्योत्तमा आश्चर्यचकित किछु क्षण कालिदासकेँ अपलक देखैत छथि फेर सहसा क्षमा पतिदेव! क्षमा स्वामी!! करैत कालिदासक पयरपर खसि पड़ैत छथि। कालिदास अत्यन्त नेहपूर्वक हुनका उठा अपन छातीमे सटा लैत छथि। दुनूक आँखिसँ बहैत नोर अपन-अपन पश्चात्तापक सभटा कथा कहि दैत अछि।)

कालिदास : **(प्रकृतिस्थ होइत)** क्षमायाचना नहि कयल जाय देवी! क्षमायाचना तऽ हमरा अहाँसँ करबाक चाही जे अपात्र रहितो छलपूर्वक अहाँ संग विवाह कयने रही। छद्म विद्वत्ताक दम्भ भरने रही। अहाँक संग विश्वासघात कयने रही। अहाँ चाही तऽ आइ हमर परीक्षण कऽ सकैत छी।

विद्योत्तमा : कोनो परीक्षण नहि स्वामी! बस हमरा क्षमादान देल जाय।

कालिदास : अहाँकेँ क्षमादान हम नहि दऽ सकब प्रिये! हमरे क्षमा कएल जाय। अहाँक लेल हमर मित्र कुमारदास जीवन पर्यन्त एहि भुजपाशक बंधनमे रहबाक पैघ दण्ड निर्धारित कऽ देने छथि। **(विद्योत्तमाकेँ अपन भुजपाशमे लैत छथि। दुनू हँसैत छथि)**

विद्योत्तमा : अपनेक ओहि मित्रक प्रति हम चिरकृतज्ञ रहब स्वामी! कृपया हुनका विषयमे किछु आर कहल जाय।

कालिदास : कुमारदास श्रीलंकाक युवराज छथि। अहाँक तिरस्कारक बाद हम उच्चैठ गुरुकुलमे रसोइयाक चाकरी करैत रही। एक भयंकर आँधी-तूफान आ वर्षा वला रातिमे माता उच्चैठ भगवतीक मन्दिरमे दीप जरएबाक लेल कोइ तैयार नहि भेल तखन हम जानपर खेलि नदी पार कऽ मन्दिर गेल रही। भगवती हमर दीपदानसँ प्रसन्न भऽ विद्याक वरदान दैत प्रेरणा देलनि जे हम महर्षि कण्वक गुरुकुल जाय। ओहि दिन राजसभामे हमर परिचय महर्षि कण्वक सर्वश्रेष्ठ शिष्यक रूपमे देल गेल छल। हम ओतहि गेलहुँ।

विद्योत्तमा : ओह!

कालिदास : श्रीलंकाक युवराज कुमार धातुसेना ओहि गुरुकुलमे विद्या अध्ययन करैत छलाह। ओ हमरासँ अत्यधिक स्नेह करैत छलाह। हम भगवतीक कृपा स्वरूप वाग्दान केर बाद अपन नाम कालिदास कऽ लेल। हमर नाम कालिदासक अनुकरणपर ओ अपन नाम कुमार धातुसेनासँ कुमारदास कऽ लेलनि। ओ हमरा अनेक बेर सहायता कयलनि। अनेक संकटसँ हमर रक्षा कयलनि। गुरुकुलसँ विदा होइत काल ओ हमरासँ वचन नेने छलाह जे हम अहाँकेँ क्षमा कऽ देब आ सदा संग राखब। आइ ओ वचन सेहो पूर भऽ गेल। हुनका देल दू वचन पूर कऽ देलहुँ आब तेसर वचन पता नहि कहिया पूर होयत!

विद्योत्तमा : प्रथम-दोसर-तेसर कोन वचन स्वामी?

कालिदास : प्रथम वचन छल अहाँ ओतऽ स्वयं आबि अहाँकेँ क्षमादान दैत सदा अपना संग राखब। से आइ संपन्न कएल। दोसर वचन छल महाराज विक्रमादित्यक दरबारक नवरत्न बनबाक प्रस्तावपर स्वस्ति देब से हम हुनक वचनानुसार ओही दिन पठा देलहुँ। तेसर वचन अछि एक बेर हुनक मातृभूमि श्रीलंका जा हुनकासँ भेंट करब। हमरो माता जानकीक अशोक वाटिका आ महाबली दशानन केर किला आदि देखबाक अछि तेँ हम ओतऽ अवश्य जायब। ओ हमरो वचन देलनि जे आपसीमे ओ हमरा संग हमर मातृभूमि मिथिला आबि जनकपुर आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करताह।

विद्योत्तमा : ओह! विलक्षण! ओ कुमारदास तऽ हमर श्रेष्ठ भ्राता भेलाह जे अपन एहि परित्यक्ता बहिनक दुख बूझि अहाँसँ वचन लऽ हमरा सभक मिलन केर मार्ग प्रशस्त कयलनि। हम दूरेसँ अपन ओहि वीर अग्रजकेँ प्रणाम करैत छी जिनकर कारणेँ आइ हमरा सभक चिरप्रतीक्षित पुनर्मिलन भेल। **(दक्षिण दिशामे दुनू हाथ जोड़ैत छथि)**

कालिदास : वीर अग्रज?

विद्योत्तमा : हँ स्वामी ! हमरा हुनका कहियो भेंट नहि। हम तऽ हुनकर नामो नहि सुनने रही। तथापि ओ हमर संकट हरलनि, हमर विपत्ति दूर कयलनि ई वीरे कऽ सकैछ। वीर केर एक अर्थ विपत्ति रक्षक भ्राता सेहो तेँ वीर अग्रज कहलहुँ।

कालिदास : वाह वाह! अहाँ सरिपहुँ विदुषी छी। अहाँ हमर मित्रसँ आइ नव सम्बन्ध जोड़ि लेल ! बहुत नीक प्रिये!! आइ हम अहाँकेँ एक उपहार देब जे ओहि राति नहि दऽ सकल रही प्रिये! आइ

अहाँक मुखारविन्दसँ नि:सृत तीनू शब्द— अस्ति, कश्चित् आ वाग्विशेष:सँ अपन तीन रचना आरम्भ कऽ एहि शब्द त्रिवेणीकेँ अमरता देब। ई हमर प्रथम मिलन केर उपहार होयत। एहि लेल रचना सभमे किंचित् परिमार्जन करब। आजुक एहि पुनर्मिलनपर यैह हमर प्रेमोपहार थिक अहाँक लेल।

(प्रियंवदाक प्रवेश।)

प्रियंवदा : **(सोल्लास)** अहोभाग्य हमरा सभक जे एहन शुभ घड़ी आयल। सुस्वागतम् महर्षि कण्वक अनुपम शिष्य! शुभ स्वागतम् हे भारतवर्षक सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक मेधा सम्पन्न कालिदास! हमर विरहिन सखीक दीर्घ विरहकेँ स्वयं पधारि समाप्त कयनिहार श्रेष्ठतम प्रतिभाक स्वागत अछि। हे रसराज! शृंगारक सरितासँ समस्त संसारकेँ सुख देल जाय। सखि विद्योत्तमा आ हमरा सभक जीवन अत्यन्त कष्टमय भऽ गेल छल। अहाँ सभक पुनर्मिलनसँ सब फेर मधुमय भऽ गेल। धन्य भाग्य!! विद्योत्तमा! सबसँ पहिने ई सुखद समाचार सभकेँ सुना दी। फेर हमसभ गिरिजास्थान आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करबाक लेल प्रस्थान करब। कतेक कबुला-पातीपर आइ ई सुखद दृश्य देखि रहल छी। आइ फेरसँ ओ गीत गायब जे अहाँ सब ओहि दिन सुनि नहि सकल रही—

बीतल राति इजोरिया उगल लुबधुब चमकय चान रे।
कौआ कुचरय पवन सिहकावै मौसम बड़ बेइमान रे।

(विद्योत्तमा प्रियंवदाक छातीमे हँसैत मुक्का मारैत नुका जाइत छथि। कालिदास मुस्काइत छथि। यवनिका पात।)

दृश्य- छओ

(श्रीलंकाक एक नगर माटरामे राजनर्तकी कामसेनाक घर। देवालपर सिंह केर आकृति, समुद्र केर रम्य तट केर चित्र आ सुन्दर कलाकृति सब सुशोभित अछि। द्वारपर सजल दीपक केर रोशनी घरक शोभा बढ़ा रहल अछि। द्वार खटखटएबाक स्वरपर कामसेना प्रकट होइत छथि। आकर्षक देहयष्टिपर सुन्दर परिधान आ स्वर्णाभूषण दमकैत अछि। सामने कालिदास राजसी परिधानमे ठाढ़ छथि।)

कालिदास : देवी! हम भारतवर्षसँ आएल एक पथिक छी। की अहाँ हमर भाषा समझि रहल छी?

कामसेना : **(कालिदासपर एक नजरि दैत)** अवश्य महानुभाव। हम अहाँक भाषा समझि रहल छी। महाराज कुमारदासक राजदरबारमे एहि भाषामे सेहो वार्त्तालाप होइत अछि। कहल जाय श्रीमन्!

कालिदास : ई हमरा लेल अत्यन्त आह्लादकारी अछि जे सिंहल दरबारमे हमर मातृभाषा मैथिलीक व्यवहार होइत अछि। एहिसँ हमरा अत्यधिक सुविधा होयत।

कामसेना : अपन परिचय आ उद्देश्य कहल जाय महानुभाव!

कालिदास : अवश्य सुन्दरी! हमर नाम कालिदास अछि। सन्ध्याकाल समुद्र तटपर अस्ताचलगामी सूर्यक अनुपम दृश्य देखि आनन्द विभोर

भऽ गेल छलहुँ आ समय केर ध्यान नहि रहल। ओह! की विलक्षण दृश्य छल ओ जेना दिन भरि जरैत रहलाक बाद विशाल अग्निपुंज शीतलता लेल शनैः शनैः समुद्रमे समा रहल हो। एहि अनुपम दृश्यकेँ अपन हृत्पटलमे अंकित करबाक क्रममे विलम्ब भऽ गेल। आब राजासँ अखन भेंट करब उचित नहि अछि। भोरमे राजदरबार जाएब। रात्रि-विश्रामक लेल आश्रय केर याचना करैत छी।

कामसेना : हम कामसेना महाराज कुमारदासक दरबारमे राजनर्तकी छी। अहाँक परिधानसँ स्पष्ट अछि जे अपने कोनो राजपुरुष छी। अतिथि देवो भव! अपनेक स्वागत-सत्कार करब हमर धर्म अछि। किन्तु आजुक लेल हम विवश छी। हमर घरसँ तीन प्रासाद आगू एक सराय अछि। अपने हमरापर कृपा करैत आजुक लेल ओतहि शरण ली मान्यवर!

कालिदास : हम सराय अवश्य देखि लेब सुभगे! तथापि की हम अपनेक विवशता जानि सकैत छी?

कामसेना : अपने ई जानि की करब? काल्हि अपने हमरा ओतऽ आबि सकैत छी। आजुक लेल हम असमर्थ छी। हमरा क्षमा कयल जाय श्रीमन् !

कालिदास : हम अतिथि बनि आयल छी। अतिथिक धर्म अछि जे आतिथेयक समस्या समाधानमे हुनक सहायता करी। संभव अछि जे हम अपनेक किछु सहायता कऽ सकी।

कामसेना : क्षमा आगन्तुक! काल्हि राजदरबारमे सर्वश्रेष्ठ समस्यापूर्त्तिपर दस सहस्त्र स्वर्णमुद्राक पुरस्कार घोषित अछि। अपने राजपुरुष छी। अपनेक यथोचित स्वागत-सत्कारमे हमरा बहुत समय लागत आ हम एहि सभमे लागि जायब तऽ ओहि समस्यापर सोचबाक लेल हमरा एकान्त समय नहि भेटि सकत। एहि कारणेँ हम क्षमायाचना करैत छी। अपने अन्यथा नहि लेल जाय।

कालिदास : एहि लेल क्षमायाचनाक कोनो प्रयोजन नहि अछि बाले! अहाँ सन सुन्दरीक मुखमण्डलपर चिन्ता वा परेशानीक रेख नहि शोभैत अछि। समस्यापूर्त्तिक लेल अपने एतेक गम्भीर किएक छी ?

कामसेना : ई मात्र दस सहस्र स्वर्णमुद्राक बात नहि अछि।

कालिदास : तखन आर कोन बात ?

कामसेना : **(मुस्की दैत)** ई एक गोपन रहस्य अछि आर्य! महाराज कुमारदास रसिक शिरोमणि छथि आ हम हुनकर सर्वाधिक प्रिय राजनर्तकी छी। हम आब मात्र राजनर्तकी नहि छी। महाराज हमरा प्रति आकर्षित छथि आ हम सेहो हुनकासँ प्रेम करैत छी। हुनकर प्रिया बनल रहबाक लेल ई समस्यापूर्त्ति हमरा अवश्य जीतबाक अछि। एतेक पूछताछ नहि कएल जाय आ हमरा क्षमा कएल जाय। हमरा एहि समस्यापर सोचबाक अछि।

कालिदास : समस्याक प्रथम पंक्ति कहल जाय वनिते! अहाँक उद्देश्य अवश्य फलीभूत होयत आ अहाँ राजाक हृदयेश्वरी बनल रहब। ई एक भारतीय केर वचन अछि राजनर्तकी कामसेनाजी!

कामसेना : **(खौंझाइत)** हमरा कोनो वचन नहि चाही हमरा मात्र एकान्त चाही।

कालिदास : हम भारतीय अपन देल वचनकेँ आपस नहि लैत छी। अहाँ प्रथम पंक्ति पढ़ू तऽ...

कामसेना : अहाँ हद्द करैत छी। सुनल जाय! जँ समुचित समाधान नहि भेल तखन हम सब मर्यादा बिसरि जाएब। की अपने ओहि अपमानक लेल तैयार छी?

कालिदास : अवश्य!

कामसेना : तखन सुनल जाय। समस्या अछि जे कमलसँ कमल केर उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइछ—

कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते...

कालिदास : **(हठात्)** *बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्।* बाले! कमलसँ कमल केर उत्पत्ति जँ मात्र सुनल जाइत अछि आ देखल नहि जाइत अछि तखन अहाँक मुखकमलसँ दू नयनकमल कोना उत्पन्न भऽ रहल अछि?

कामसेना : ओह! अद्भुत! विलक्षण! आर्यश्रेष्ठ! क्षमा कएल जाय एहि अकिंचनकेँ जे भारतवर्षक स्यमन्तक मणिकेँ चीन्ह नहि सकल। पधारल जाय श्रीमान! अपनेक चरण रजसँ आइ ई कुटिया पावन भेल! आइ हमरा एक श्रेष्ठ भारतीय केर अटूट आत्म विश्वासक दर्शन भेल। अपन अद्वितीय मेधासँ अपन वचनक रक्षा करैत देखि हम आश्चर्यचकित छी मान्यवर अतिथि! अहाँ सन अतिथि केर आतिथेय बनब हमर परम सौभाग्य! हमरा अपन स्वागत-सत्कारक अवसर देबाक कृपा कएल जाय हे भारतवर्षक रत्न नरश्रेष्ठ!

कालिदास : आभार देवी कामसेना!

कामसेना : आभारी हम छी जे अपनेक आतिथेयक अवसर भेटल। अपने विश्राम कएल जाउ हम भोजनादिक व्यवस्था करैत छी।

कालिदास : नहि देवी! अखन विश्राम नहि। पहिने स्नान करब हम आ फेर आजुक सन्ध्याकाल जे अपूर्व दृश्य देखल ओकरा सभकेँ लिपिबद्ध करब।

कामसेना : **(आश्चर्यचकित)** की अपूर्व दृश्य छल आर्य ?

कालिदास : समुद्रक कात सूर्यास्त केर विलक्षण दृश्य देखल। लागल जेना भगवान् भास्कर भरिदिन ताप बिल्हैत-बिल्हैत ततेक गर्म भऽ गेलाह जे सन्ध्याकाल शीतलताक लेल स्वयं समुद्रमे सन्हिया गेलाह। सम्पूर्ण क्षेत्र सिन्दूरी शोभासँ शोभायमान छल जेना श्रीलंकाक समुद्रमे सुरक्षित समस्त स्वर्णभंडार सतहपर आबि सोनाक सेतुबन्ध बना देने हो।

कामसेना : ओह विलक्षण!

कालिदास : हम अपलक ई अपूर्व दृश्य निहारि रहल छलहुँ। ओह! आधा सूर्य समुद्रमे आ आधा बाहर! लगैत छल जेना कोनो स्वर्ण परात ओन्हल हो वा जेना समुद्रपर अर्द्ध चन्द्राकार कोनो कनकभवन बनल हो। डूबल भाग सेहो ओहिना देखा रहल छल। ई भागमे जेना सोनाकेँ अपना दिशि खीचबाक शक्ति हो आ सागरमे सुरक्षित समस्त स्वर्णभंडार आकर्षित होइत ओतहि जमा भऽ गेल हो।

कामसेना : ओह! सुन्दर बिम्ब विधान!

कालिदास : देवी! जेना-जेना अन्हार बढ़ि रहल छल लगैत छल जेना वसुधा देवीक माथपर सीउथ बनि रहल हो। एक दिशि समुद्रक एक कात केर गाछ-वृक्षक हरीतिमामे सन्हिआयल अन्हार आ दोसर दिशि समुद्रमे पसरल अनन्त अन्हार जेना वसुधा देवीक अनन्त केशराशिकेँ सीउथ दू भागमे बाँटि देने हो आ एहि सीउथमे सूर्यक रेख जेना सिन्दूर बनि सुशोभित हो।

कामसेना : सरिपहुँ अपने अद्भुत छी।

कालिदास : तखने बुन्नी पड़ब शुरू भऽ गेल। हम दृश्यावलोकनमे तेहन लीन रही जे हम बरखामे भीजैत रहलहुँ मुदा आँखि नहि हटा सकलहुँ। वसुधा देवीक सीउथ केर सिन्दूर जेना सर्वत्र पसरि गेल हो आ बरखाक बुन्नी जखन आरक्त समुद्रक सतहपर खसैत छल तखन जे लघूर्मि उठैत छल ओ सेहो छोट-छोट स्वर्णकलश समान चमकि वृत्त बनि समुद्रमे समा जाइत छल। ओह! हम आनन्दविभोर भऽ भीजैत रहलहुँ तथापि हटि नहि सकलहुँ। बुन्न खसलापर बनैत लघु स्वर्णकलश आ वृत्त सभक आनन्द लैत रहलहुँ।

कामसेना : ओह! एहन सूक्ष्म दृष्टि!

कालिदास : देवी! हम एहि समस्त भावकेँ लिपिबद्ध करब आ भोरमे अहाँकेँ सुनायब। जे भावचित्र अहाँक सर्वश्रेष्ठ लागत ओहिपर आर परिश्रम करब आ जखन ओ हमर मनोनुकूल भऽ जाएत तखन ओकरा अपन आगामी रचनामे स्थान देब।

कामसेना : हमरा जे सर्वश्रेष्ठ लागत?

कालिदास : हँ देवी! सृजन पाठके लेल ने! हम बड़भागी छी जे अहाँ सन विदुषी हमर एहि सृजन-प्रक्रियामे हमर सहयोग करब। पूर्वमे एकबेर किछु एहने दृश्यक साक्षात्कार हमरा अपन क्षेत्रक महावराह क्षेत्रमे भेल छल आ ओतए आकाशगंगाक अवतरण केर कल्पना साकार भेल छल। देखै छी एहि बेर की होइत अछि। बेस! स्नानागार कतऽ अछि?

कामसेना : हँ! अहाँक वस्त्र अखनो किछु भीजले अछि। आउ! **(संकेत करैत)** स्नानागार ओम्हर अछि।

(कामसेना विनीत भावसँ आग्रहपूर्वक कालिदासकेँ अन्दर लऽ जाइत छथि। ओ अपन कुटिल मुस्की आ बाउर कूचबाक भाव-भंगिमासँ कोनो पैघ षड्यंत्रक आभास करबैत छथि। यवनिका पात)

दृश्य- सात

(श्रीलंकाक राज दरबार सजल अछि। सिंह केर विशाल आकृति सभक चित्र सब देवाल सभपर सुशोभित अछि। यत्र-तत्र पितरिया, काँसा आ चानीक सिंह प्रतिमा राखल अछि। मध्यमे राजसिंहासन लऽग सिंह केर भव्य स्वर्ण प्रतिमा सुशोभित अछि। सभासद सब अपन-अपन आसनप विराजमान छथि। चारणक उद्घोष होइत अछि)

चारण : सावधान! 'जानकीहरण' काव्य केर प्रणेता, नृपश्रेष्ठ धातुसेनाक पौत्र, सुर सेनापति स्कन्द समान वीरश्रेष्ठ राजा मोग्गलानक पुत्र, महाथोटा माटरा भूषण, बल-बुद्धि-विद्या श्रेष्ठ, दानवीर दया सागर, रसिक शिरोमणि, स्वर्णिम लंकाधिपति कुमार धातुसेना प्रसिद्ध महाकवि कुमारदास पधारि रहल छथि!

(कामसेना कुमारदासकेँ सम्हारैत मंचपर प्रवेश करैत अछि। सभासद सब अपन-अपन आसनसँ उठि सम्मान प्रकट करैत जय-जयकार करैत अछि। कुमारदास आसन ग्रहण करैत छथि। तेकर बाद सब सभासद अपन आसन ग्रहण करैत अछि। कुमारदास हाथ उठा राजसभाक कार्यवाही शुरू करबाक संकेत करैत छथि।)

कामसेना : महाराजक जय हो! राजसभाक कार्यवाही हुनक आदेशसँ आरम्भ होइत अछि। आइ हमसब आनन्दोत्सवमे एकत्रित भेल छी। एहि आनन्दोत्सवमे सर्वप्रथम हमर गीत-नृत्य होयत फेर समस्यापूर्त्ति आ आन राजकाज। अपने सब आनन्द लेल जाय।

कामसेना नृत्य करैत गीत गबैत छथि—

सुरम्य सागर तट सुशोभित
साहस शक्ति सौन्दर्य अशेष।
चन्दन चर्चित गजमुक्ता शोभित
मसृण मृदु मोती मंडित भेष।।
जयति जय अनुपम सिंहल देश।
प्रकृति पुत्री प्रचण्ड प्रातिभ
प्रणव नाद सप्त स्वर स्वामिनी।
ज्ञान गर्वित शीर्ष शिखर विवेकी
सकल बल बुद्धि विद्या धारिणी।।
सुन्दर श्रीलंका व्योम डंका विश्वविश्रुत विशेष।
जयति जय अनुपम सिंहल देश।

कुमारदास : एतेक वर्ष बाद आइ पता नहि किएक एहि आनन्दोत्सवमे महाकवि कालिदास कोना मोन पड़ि गेलाह। कोनो काव्यपाठ वा आनन्दोत्सव बिनु कालिदास अपूर्ण अछि।

कालिदास कविता नवं वयो माहिषंदधि सशर्करं पयः।
शारदेन्दुरबला च कोमला प्राप्यते सुकृतिनैव भूतले।।

अर्थात् कालिदासक कविता, नव महीसक दूध केर दही, शर्करा युक्त दूध, शरद् केर चाँदनी रातिमे कोमलांगी सभक साहचर्य एहि धरतीपर भाग्यवाने सभकेँ भेटैछ।
आह! की सुख अछि! आइ हम अहाँ सभक समक्ष एक गोपन रहस्य अनावृत करैत छी।
(सभासद सब साधु-साधुक समवेत स्वरसँ वातावरण गूँजायमान करैत छथि)

कुमारदास : सुनलहुँ जे हमरे देल अपन वचन केर निर्वाह करैत महाकवि विद्योत्तमाकेँ क्षमा कयलनि। स्वयं विद्योत्तमा ओतऽ जा कहलनि— देवि द्वार देहि। प्रमुदित विद्योत्तमाक आश्चर्यचकित उत्तर छल— *अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः*। एहि तीनू शब्दसँ महाकवि तीन

कालजयी रचना शुरू कऽ एहि शब्द सभकेँ अमरत्व प्रदान कयलनि। *अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:* सँ कुमारसंभवम्, *कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:* सँ मेघदूतम् आ *वागर्थाविव सम्पृक्तो वागार्थ: प्रतिपत्तयै*सँ रघुवंशम् केर आरम्भ कऽ महाकवि एहि शब्द त्रिवेणीमे स्नान करा सम्पूर्ण संसारकेँ निरभ्र कऽ देलनि। मेघदूतम् केँ कश्चित् सँ आरम्भ करबाक लेल तदनुसार परिमार्जन सेहो कएल गेल।

सभासद 1 : महाकवि कालिदासक काव्य आ नाटक अद्भुत अछि। मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् आ विक्रमोर्वशीयम् सन नाटक तऽ एहिसँ पूर्व लिखले नहि गेल। मेघदूतम्, कुमारसंभवम् आ रघुवंशम् काव्य केर कोनो परतर भऽ नहि सकैत अछि। काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला आ शाकुन्तलेन स कविर्नाटकेनाप्तवान यश: सन सूक्ति अभिज्ञान शाकुन्तलम् केर लेल अछि। के इह रघुकारे न रम्यते कालिदास आ रघुवंशम् केर अलौकिक लोकप्रियताक प्रमाण अछि। उपमा कालिदासस्य से सुप्रसिद्ध अछि—

सरस्वती व कर्णाटी विजयां का जयत्ससौ।
या वैदर्भीगिरांभूमि: कालिदासादनन्तरम्।।

कतेक गानल जाय। जे बात महाकवि कालिदासमे अछि ओ कोनो आन कविमे नहि।

कुमारदास : निश्चित रूपसँ। तँ माता सरस्वती सोऽहं कहि स्वयंकेँ कालिदास कहि देलनि। महाकवि कालिदासक ज्ञान गर्वित दर्पणमे समग्र संसार प्रतिबिम्बित होइछ—

महाकवि कालिदासं वन्दे वाग्देवतागुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिम्बवत्।।

धन्य-धन्य हे मित्र कालिदास!

कामसेना : **(चौंकैत)** कालिदास अहाँक मित्र?

कुमारदास : अहाँक ज्ञात नहि अछि कामसेना! महर्षि कण्वक गुरुकुलमे हम सब सहपाठी छलहुँ। भारतवर्षक काञ्ची नगरमे सेहो हम सभ किछु समय संग रहल छी। ओ हमर काव्य 'जानकीहरण' केर प्रथम पाठक, शोधक आ समीक्षक छथि। हमर मूलनाम तऽ कुमार धातुसेना छल मुदा महाकवि कालिदाससँ प्रभावित हम अपन साहित्यिक नाम कालिदासक अनुसरणमे कुमारदास कऽ लेलहुँ। हुनकेसँ हम हुनक मातृभाषा मागधी अपभ्रंश मैथिली सिखने छलहुँ जेकर प्रचार-प्रसार अपन दरबारमे सेहो कयलहुँ आ आइ हमर सभासद सभ एहि मधुर मैथिलीमे निपुण भऽ एहिमे वार्त्तालाप करबामे सक्षम छथि।

कामसेना : ओह हो!

कुमारदास : महाकवि कालिदास हमर अभिन्न मित्र, अनन्य सखा, अद्वितीय बन्धु आ अनुपम प्राणाधार छथि। ओ हमरा वचन देने छथि जे एक बेर हमरासँ भेंट करबाक लेल हमर मातृभूमि श्रीलंका अवश्य अओताह। पता नहि ओ दिन कहिया आओत। हम सेहो हुनका वचन देने छी जे आपसीमे हुनका संग हुनकर मातृभूमि मिथिला अवश्य जायब आ जानकी जन्मभूमिपर साष्टांग प्रणाम करब। महामूर्खसँ विश्वविश्रुत विद्वान् बनओनिहारि उच्चैठ भगवतीक दर्शन करब। अपन मित्रक जन्मभूमि मिथिलाक माटि अपन माथमे लगा धन्य होएबाक सेहन्ता अछि हमरा। पता नहि कहिया हमर ई मनोरथ पूर होयत।

कामसेना : क्षमा महाराज! सब ईश्वरक इच्छा। आब समस्यापूर्त्तिपर विचार केर आदेश देल जाय महाराज!

कुमारदास : समस्यापूर्त्तिक प्रति अहाँ आइ अत्यधिक उत्सुक छी कामसेना! अहाँ हमर सभसँ प्रिय आ सुन्दर राजनर्तकी छी। अपन विशिष्ट वाक् चातुर्य, मनमोहक नृत्य, अनुपम देहयष्टि आ उद्दाम यौवनसँ हमरा सभकेँ परमानन्द प्रदान करैत छी। अहाँ कतेक बेर समस्यापूर्त्तिक प्रथम पुरस्कार प्राप्त कएने छी। एहि बेर दस सहस्र स्वर्णमुद्राक पुरस्कार अछि तेँ अहाँ किछु विशेष व्यग्र छी की? वा पुरस्कार जीतबाक लेल आश्वस्त छी अहाँ?

कामसेना : अपने सन रसिक शिरोमणिक प्रिया बनल रहबाक लेल ई पुरस्कार जीतब आवश्यक अछि महाराज!

कुमारदास : महामंत्री! समस्यापूर्त्ति आरम्भ कयल जाए।

सभासद 1 : **(उठैत)** महाराजक जय हो। उपस्थित सुहृदजन! समस्यापूर्त्तिक विषयमे अपने सभ जनैत छी। आजुक समस्या पूर्वमे देल जा चुकल अछि। हम प्रथम पंक्ति पढ़ब आ अहाँ सब बेरा-बेरी अपन दोसर पंक्ति पढ़ब। जिनकर दोसर पंक्ति सर्वश्रेष्ठ होयत हुनका दस सहस्त्र स्वर्णमुद्राक पारितोषिक देल जायत। प्रथम पंक्ति अछि—

कमल: कमलोत्पत्ति: श्रूयते न तु दृश्यते।

अर्थात् कमलसँ कमलक उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइत अछि।

कामसेना : **(हठात् उठैत)**

बाले तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्

अर्थात् तखन अहाँक मुख कमलसँ दू नयन कमल कोना बहरा रहल अछि।

(सभासदगण विलक्षण पंक्ति, अत्यन्त रमणीय पूर्त्ति, अपूर्व समाधान, वाह वाह, राजनर्तकी कामसेनाक जय हो आदि केर जयकारा लगबैत छथि।)

कुमारदास : ई अप्रतिम पंक्ति फेर महाकवि कालिदासक स्मरण करा देलक। एहन सटीक आ विशिष्टतायुक्त विलक्षण समस्यापूर्त्ति कालिदासक अतिरिक्त केओ आन नहि कऽ सकैत अछि। कामसेना! सत्य कहू जे अहाँ महाकवि कालिदाससँ कहियो भेंट कएने छी?

कामसेना : नहि महाराज! हम कोनो कालिदाससँ कहियो नहि भेंट कयने छी।

कुमारदास : **(कड़क स्वर)** फेर अहाँ अपने लेल एहि 'बाले' शब्दक प्रयोग कोना कयलहुँ? हमरा मुहसँ 'मित्र कालिदास' सुनि अहाँ सेहो

अकचकाइल रही। सच-सच बताउ जे कतय छथि हमर मित्र ? नहि तऽ अखने अपना हाथेँ अहाँकेँ मृत्युदंड दैत छी। **(म्यानसँ तलवार घीचि कामसेनाक घेँटपर राखि दैत छथि।)**

कामसेना : **(दुनू हाथ जोड़ैत)** क्षमा महाराज! अभयदान महाराज! प्राणदान महाराज!

कुमारदास : सब बात सच-सच बता देलापर कदाचित् तोरा प्राणदंडसँ मुक्ति भेटि जाउ। **(तलवार हटा लैत छथि।)**

कामसेना : सर्वथा सत्य कहब हम। मात्र जान बकसि देल जाय महाराज! काल्हि सन्ध्या काल एक गौरांग सुदर्शन व्यक्ति हमर द्वारपर दस्तक देलनि। ओ रातिमे आश्रय केर याचना कयलनि आ भोरमे दरबार अयबाक बात कहलनि। हम समस्यापूर्त्तिपर चिन्तन करबाक लेल समयाभावक कारणेँ आश्रय देबासँ मना कऽ देलहुँ तखन ओ हमरासँ समस्या पुछलनि। प्रथम पंक्ति— *कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते* पढ़िते मात्र हठात् हुनकर मुहसँ निकसि गेल— *बाले तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्।* हम आश्रय देलहुँ मुदा ई निश्चित छल जे जँ ई दरबारमे अबितथि तऽ पुरस्कार हिनके भेटैत तेँ पुरस्कारक लोभवश हम रातिमे भोजनोपरान्त दूधमे माहुर मिला हुनकर हत्या कऽ देलहुँ।

कुमारदास : ओह!

कामसेना : फेर भिनसरबामे अपने घरमे तरहरा खुनि हुनका गाड़ि देलहुँ। हमर एक-एक शब्द सत्य अछि महाराज! आब हमरा प्राणदान देल जाओ। क्षमा महाराज क्षमा!

कुमारदास : **(विलाप करैत)** हा हन्त! हमर मित्र! अहाँ अपन देल वचन पूर कयलहुँ। हमर मातृभूमि श्रीलंका आबि हमरासँ भेंट करबाक वचन निभा देलहुँ मुदा हम अहाँक रक्षा नहि कऽ सकलहुँ। धिक्कार अछि हमरा राजा भेलापर। **(कामसेनाकेँ धक्का दैत)** अरे पातकी! तू महाकवि कालिदासक नहि तू तऽ हमरा माहुर खुआ देलेँ, हमर हत्या कऽ देलेँ। ओह मित्र! अहाँ संगे हमरा

अहाँक मातृभूमि मिथिला जएबाक छल। जानकी जन्मभूमि, जनकपुर आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करबाक छल। हाय रे हमर भाग्य! **(कुमारदास विलाप करैत छथि आ सभासद सब हुनका सम्हारैत छथि।)**

कुमारदास : **(कामसेनाकेँ गर्दनि पकड़ि धक्का दैत)** अरे एहि नागिनकेँ दंड तऽ बादमे देब पहिने एकरा लऽकेँ एकर घरसँ हमर मित्रकेँ आनल जाय। सर्वश्रेष्ठ राजकीय सम्मानसँ श्रेष्ठ श्रीखण्ड रक्तचन्दन केर चिता सजाओल जाय। युवराज कित्तीसेनाकेँ अति शीघ्र उपस्थित होयबाक आदेश पठाओल जाय।
(कुमारदास आ एकमात्र चारण छोड़ि सब मंचसँ प्रस्थान करैत छथि।)

कुमारदास : **(एकल विलापक मुद्रा)** कालिदास! हमर मित्र, हमर सखा, हमर बन्धु! हमरा क्षमा करब हम अहाँक रक्षा नहि कऽ सकलहुँ। ओह! एक बेर गुरुकुलमे अपना लेल अग्रज आ बन्धु संबोधन सुनि अहाँ द्रवित भऽ गेल छलहुँ। हमर अंक मालिकापर अहाँ केहन भाव-विह्वल भेल छलहुँ मित्र! आ हम केहन अधम आ अभागल जे अपन बन्धुकेँ बचा नहि सकलहुँ। हम कोन मुहसँ विद्योत्तमाक सोझाँ जा सकब? हुनकर पैघ-पैघ आँखिसँ अश्रु-प्रवाह कोना देखि सकब हम? हमरे देल वचन केर निर्वाहक कारणेँ महाकवि कालिदास आ विदुषी विद्योत्तमाक पुनर्मिलन भेल छल आ एहि अनुपम युगल जोड़ीकेँ तोड़बाक पापो हमरे माथ बथाएल। हाय रे हमर भाग्य! कालिदास आ विद्योत्तमाक बहुत पैघ ऋृण हमरापर, हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। एहि महाॠणसँ हम कोना उऋण होयब हे महादेव!

(सभासद 1 केर प्रवेश)

सभासद 1 **:** महाराज! महाकवि कालिदासक चिता नगर माटराक दक्षिणी क्षेत्रक किरीन्दी नदीक मुहानपर सर्वोच्च श्रेणीक राजकीय सम्मानक संग सजाओल जा चुकल अछि। ई स्थान राजमहलक सामने अछि। युवराज मुखाग्नि...

कुमारदास : नहि ! किन्नहु नहि ! अपन मित्रकेँ मुखाग्नि दऽ हम स्वयं विदा करब।

प्रजा द्वारा कएल पापक प्रायश्चित राजाकेँ स्वयं करबाक चाही। हमरा ओतऽ लऽ चलू।

(मुख्य मंचक बामा कात लागल पर्दा हटि जाइत अछि। चारण आ सभासद सहारा दैत मंच केर बामा कात सजाओल चिता तक कुमारदासकेँ अनैत छथि। लघुमंच केर पर्दा उठि जाइत अछि। ओतऽ युवराज कित्तीसेना आ सभासद सब उपस्थित छथि। कुमारदास मुकुट उतारि युवराजक हाथमे दैत छथि फेर अपन उपरका परिधान उतारैत छथि जे चारण सम्हारि लैत अछि। कुमारदास *'ॐ देवाश्चाग्निमुखा: सर्वे कृतस्नपनं गतायुषमेनं दहन्तु'* **मंत्र पढ़ैत उल्का हाथमे लैत छथि। फेर** *'ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्यु कालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकाञ्च गच्छतु'* **मंत्रोच्चार करैत चिताक परिक्रमा कऽ कालिदासकेँ मुखाग्नि दैत छथि। चिता धधकि उठैत अछि।)**

कुमारदास : **(विलाप करैत)** हे मित्र कालिदास! जे हाथ कहियो अहाँकेँ उठा हृदयसँ लगओने छल वैह हाथ आइ अहाँकेँ मुखाग्नि देलक। ओहि दिन अंकमालिका काल हमर हाथ काँपल नहि छल ओ अत्यन्त प्रफुल्लित छल मुदा आइ... आइ मुखाग्नि दैत काल **(थरथराइत दुनू हाथ उठबैत)** ई दुनू हाथ काँपि रहल छल। हमरा क्षमा करब मित्र! अहाँ हमरा देल अपन तीनू वचन निभा देलहुँ। हमरासँ भेंट करय हमर मातृभूमि श्रीलंका अयलहुँ मुदा हम अकिंचन अपन राजधर्मक निर्वहनमे असफल भऽ गेलहुँ। अहाँ अपन दू ठोप नोरसँ सीता माताकेँ अपन नैहर मिथिलाक अनुभूति करएबाक मार्मिक कथा कहने रही से हमरे कारण संभव नहि भऽ सकल हे मित्र हमर! हमरा माफ करब! हमर देशक माटि हमर महाकवि मित्रकेँ उदरस्थ कऽ लेलक तऽ एकर प्रतिदान तऽ हमरे करए पड़त। अहाँकेँ एतऽसँ एसकर कोना प्रस्थान करऽ दी मित्र? हम वचन देने रही जे आपसीमे अहाँक संग मिथिला जायब। जहिना भारतीय सभ प्राण दइयो के अपन देल वचनक रक्षा करैत अछि तहिना हम सिंहलवासी सब सेहो अपन देल वचनक रक्षामे प्राणक मोह नहि करैत छी। हम अपन देल वचनक रक्षा अवश्य करब आ अहाँक

संग अपन अनन्तयात्रा शुरू करब। संभव अछि जे एहि अनन्त यात्रामे कहियो हमरा अहाँक संग मिथिलाक दर्शनक सौभाग्य भेटि जाए। ओहि दिन हम कृत् कृत् होयब आ तखने हमरा एहि जीवनचक्रसँ मुक्ति वा मोक्ष भेटि सकत। हे हमर देश! हमरा क्षमा करब। महाकवि कालिदासक सिंहल देशमे हत्यासँ भारतवर्षक ऋण हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। हम कथमपि नहि चाहब जे हमर देशपर कोनो आन देशक ऋण रहय। तेँ हे हमर देश! क्षमा करब हमरा। हम आब आर अहाँक सेवा नहि कऽ सकब। हे महाकवि! आइ मित्रधर्मक निर्वहन करैत भारतवर्षक श्रीलंकापर चढ़ल ऋणकेँ हम चुकता करब। अहाँक देल अपन वचन निर्वहन लेल हम अनन्त पथपर अहाँक संग चलब। प्रायश्चित करबाक लेल हम आबि रहल छी मित्र। एहि पावन नील गंगा नदीक तीरपर हमरा सभक महाप्रयाण संग-संग होयत। हमरा क्षमा करब मित्र! हमरा क्षमा करब हे हमर देश!

(कुमारदास युवराजक हाथसँ मुकुट अपना हाथ लऽ युवराजकेँ मुकुट पहिरा अपन माथक तिलकसँ युवराजकेँ तिलक करैत कालिदासक धधकैत चितामे पैसि जाइत छथि। हाहाकार मचि जाइत अछि। फेर पाँच बेर विभिन्न स्त्री स्वरमे 'प्राणनाथ', 'स्वामी', 'लंकेश्वर', 'प्राणेश्वर' आ 'हृदयेश्वर' शब्द अभरैत अछि। वातावरणमे अनेक प्रकारक करुण क्रन्दन् केर स्वर, हे महादेव, हे अवलोकितेश्वर केर आर्त्तनाद, चीत्कार, गूँज आ कोलाहल पसरि जाइत अछि।)

(यवनिका पात)

नेपथ्यसँ अबैत नट केर स्वर— सती प्रथा उचित नहि तेँ कुमारदासक पाँच रानीकेँ धधकैत चितामे प्रवेश नहि दर्शाओल गेल अछि। श्रीलंकाक मुख्य शहर कोलम्बोसँ लगभग 160 किमी दक्षिण पूबमे अवस्थित माटरा शहरमे चितास्थलपर सात टा बोधि वृक्ष लगाओल गेल छल। एहिमे अनेक हतबोधिवृक्ष माटरा शहरक विभिन्न क्षेत्र- जेना माटरा पुलिस स्टेशन, गवादा विडिया, बेलि बेरिया, मुख्य गली आ कोतुवागोड़ा पुरान सड़कपर अखनो जीवित अछि।





दरभंगा जिलाक गाम सुलतानपुर, कुशेश्वर स्थानक रहनिहार **डॉ. रंगनाथ दिवाकर** बिहार प्रशासनिक सेवामे अनेक उच्च पद सभकेँ सुशोभित करैत अपर सचिव रूपमे सेवानिवृत्त भेल छथि। 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', श्री विजय ना. मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदिक सम्पादन कयने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ' प्रमुख अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू)क मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि। दिवाकरजी शुद्ध मेधावादी छथि। स्नातक विज्ञान (प्रतिष्ठा)क बाद स्नातकोत्तर हिन्दीमे 'टॉप' कयलनि। शोधमे रूचि रखैत छथि एवं मिथिलाक इतिहास आ संस्कृति विषयक अनेक विवादास्पद घुरछीकेँ सफलतापूर्वक सोझरा देने छथि। एहिमे श्रीधर केर काल-निर्धारण, मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन, मण्डन मिश्र-शंकराचार्यक कथित शास्त्रार्थ, महाकवि कालिदासक मैथिलत्व, कन्दर्पीघाटमे मैथिल शौर्यक दिग्दर्शन आदि प्रमुख अछि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माण हिनक अमर कृति थिक आ एहि कारणेँ ओ अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। किरण पुरस्कार, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' सम्मान, मिथिला विभूति सम्मान, मिथिला रत्न सहित अनेक पुरस्कार/सम्मानसँ अलंकृत छथि।

— दीप नारायण

सम्पर्क : फ्लैट सं. 102, अनन्त विकास अपार्टमेंट, वेदनगर, रुकनपुरा, बेली रोड, पटना -800014
मोबाइल : +91 8709610336, इमेल : rangnath.chy@gmail.com



अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847211
+ 91 94305 83847
info@anuprasprakashan.com
www.anuprasprakashan.com

महाकवि कालिदासक मैथिलत्व
आ महाप्रयाण विषयक नाटक

₹ 800/–



